# 0 of 0 Result Found

## पटना की तीसरी मंज़िल

*एक BPSC अभ्यर्थी की कहानी*

**Deepak Kumar Singh**

**Chief Mentor, IAS PCS Factory**

**[DU Topper, NET-JRF, Assistant Commandant, IB ACIO, Accounts Officer, Revenue Officer]**

# समर्पण

❖ ❖ ❖

उन सभी के लिए,
जिन्होंने अपने गाँव की मिट्टी छोड़कर
शहर के किसी अँधेरे कमरे में उजाले का सपना देखा,
जिनकी उम्र कैलेंडर से नहीं, परीक्षा की तारीख़ों से गिनी जाती है,
और उन माँ बाप के लिए,
जो हर फ़ोन पर बस इतना पूछते हैं, "खाना खाया?"

# परिचय

❖ ❖ ❖

समस्तीपुर की पगडंडी से चला था एक सपना,
पटना के एक कमरे में आकर ठहर गया अपना।
दीवार पर टँगा कैलेंडर हर साल बदलता रहा,
पर उसके भीतर का इंतज़ार वैसा ही जलता रहा।

कभी प्रारंभिक ने रोका, कभी मुख्य ने लौटाया,
कभी अंतिम सूची के दरवाज़े से नाम मुड़कर आया।
प्यार भी आया, दोस्त भी आगे निकल गए,
और वह किताबों के बीच चुपचाप पिघलता गया।

यह कहानी किसी एक अमन की नहीं है,
यह हर उस कमरे की है जहाँ बल्ब देर रात तक जलता है।
अगर पढ़ते हुए आँख भर आए, तो रुकना मत,
क्योंकि यही आँसू कल तुम्हारी ताक़त बनेंगे।

# अनुक्रम

❖ ❖ ❖

भूमिका

अध्याय 1: समस्तीपुर से पटना

अध्याय 2: चाय की टपरी की संसद

अध्याय 3: कोचिंग का बाज़ार

अध्याय 4: लाइब्रेरी की तीसरी कतार

अध्याय 5: गंगा घाट की शामें

अध्याय 6: तीस सितंबर, पहला युद्ध

अध्याय 7: डेढ़ नंबर का फ़ासला

अध्याय 8: कैलेंडर पर लाल निशान

अध्याय 9: पटना की पहली होली

अध्याय 10: परिणाम की रात

अध्याय 11: मकान मालिक, मेस और बिजली का बिल

अध्याय 12: यूट्यूब के गुरु और टेलीग्राम की अफ़वाहें

अध्याय 13: न्योते जो लौटा दिए गए

अध्याय 14: अंतिम सूची का दरवाज़ा

अध्याय 15: जब श्रुति चली गई

अध्याय 16: दोस्तों की बदलती दुनिया

अध्याय 17: ट्यूशन, किराया और ताने

अध्याय 18: गर्दनीबाग की ठंडी रातें

अध्याय 19: पंकज की वह रात

अध्याय 20: मैला आँचल और मेरा गाँव

अध्याय 21: खेत, कर्ज़ और माँ की आवाज़

अध्याय 22: छोटी बहन की आवाज़

अध्याय 23: इकहत्तरवीं की प्रतीक्षा

अध्याय 24: मुख्य परीक्षा के वो दिन

अध्याय 25: पटना जंक्शन पर एक मुलाक़ात

अध्याय 26: आख़िरी उम्मीद का फ़ैसला

अध्याय 27: रवि का अंचल

अध्याय 28: जो अभी लिखा जाना बाक़ी है

पाठकों के लिए

# भूमिका

❖ ❖ ❖

पटना के मुसल्लहपुर, भिखना पहाड़ी, नया टोला और महेंद्रू की गलियों में हर साल हज़ारों लड़के और लड़कियाँ अपने गाँव से एक बक्सा, कुछ किताबें और पूरे परिवार की उम्मीदें लेकर आते हैं। उनके पास पैसे कम होते हैं, पर सपने बहुत बड़े होते हैं। वे दस बाई बारह के कमरे में रहते हैं, सत्तू और भात खाकर दिन काटते हैं, और रात को टेबल लैंप की रोशनी में अपनी तक़दीर लिखने बैठते हैं।

यह उपन्यास ऐसे ही एक लड़के अमन की कहानी है, जो समस्तीपुर से पटना आया और BPSC की परीक्षा को अपनी ज़िंदगी बना बैठा। यह कहानी असफलता की है, टूटे रिश्तों की है, ठगे गए भरोसे की है, और उस ज़िद की भी है जो हारने के बाद भी हार नहीं मानती। इसमें कोई नायक आसमान से नहीं उतरता। इसमें बस एक साधारण लड़का है, जो हर बार गिरता है और हर बार उठता है।

अगर आप भी कभी किसी परिणाम की रात सो नहीं पाए हैं, अगर आपने भी किसी शादी का न्योता यह कहकर टाल दिया है कि "इस बार नहीं, अगली बार", तो यह कहानी आपकी है।

## अध्याय 1

# समस्तीपुर से पटना

❖ ❖ ❖

जुलाई 2021 की वह सुबह अमन कभी नहीं भूल सकता। समस्तीपुर स्टेशन पर पैसेंजर ट्रेन धुआँ छोड़ती हुई खड़ी थी। माँ ने आँचल से एक पोटली निकाली, जिसमें ठेकुआ था, थोड़ा सत्तू था और तह करके रखे हुए पाँच सौ के चार नोट थे।

**"बेटा, पटना बड़ा शहर है। किसी पर जल्दी भरोसा मत करना। और खाना टाइम पर खाना।"**

पिताजी कुछ नहीं बोले। वे बस प्लेटफ़ॉर्म के खंभे से टिककर खड़े रहे। जब ट्रेन सरकने लगी, तो उन्होंने हाथ उठाया और धीरे से कहा, "अफ़सर बनकर लौटना।" यह 3 शब्द थे, पर अमन के कंधों पर पूरे घर का बोझ रख गए।

खिड़की से बाहर धान के खेत भाग रहे थे। अमन सोच रहा था कि बस 2 साल, ज़्यादा से ज़्यादा 3 साल, फिर वह सरकारी गाड़ी में बैठकर इसी स्टेशन पर उतरेगा। गाँव वाले कहेंगे, "देखो, रामबाबू का बेटा SDM बन गया।" उस दिन उसे नहीं पता था कि सपने ट्रेन की रफ़्तार से नहीं, आयोग की तारीख़ों की रफ़्तार से चलते हैं।

पटना जंक्शन पर उतरते ही शहर ने उसे अपनी भीड़ में निगल लिया। ऑटो वाले चिल्ला रहे थे, "बोरिंग रोड, बोरिंग रोड! मुसल्लहपुर, मुसल्लहपुर!" अमन के गाँव के ही एक भैया ने मुसल्लहपुर हाट के पास एक कमरा दिलवा दिया था। तीसरी मंज़िल, दस बाई बारह का कमरा, एक खिड़की जो सामने वाली दीवार में खुलती थी, और एक पंखा जो घूमता कम, आवाज़ ज़्यादा करता था। किराया तीन हज़ार रुपये महीना।

मकान मालिक ने चाबी देते हुए कहा, "यहाँ बहुत लड़के आए, बहुत गए। जो टिक गया, वही निकला। बिजली का बिल अलग लगेगा।"

उस रात अमन ने दीवार पर पहला काग़ज़ चिपकाया। मोटे अक्षरों में लिखा, "67वीं BPSC, लक्ष्य SDM"। फिर उसके नीचे छोटे अक्षरों में लिखा, "माँ-पापा के लिए।" बल्ब की पीली रोशनी में वह काग़ज़ किसी मंदिर की मूर्ति जैसा लग रहा था।

नीचे गली में कोई लड़का फ़ोन पर रो रहा था। "माँ, इस बार भी नहीं हुआ… हाँ, अगली बार पक्का।" अमन ने खिड़की बंद कर दी। उसे लगा, यह किसी और की कहानी है। उसे नहीं पता था कि शहर हर नए लड़के को पहले दिन ही उसका भविष्य सुना देता है, बस वह सुनता नहीं।

### अध्याय 2

# चाय की टपरी की संसद

❖ ❖ ❖

मुसल्लहपुर हाट के मोड़ पर बिरजू भैया की चाय की टपरी थी। चार बेंच, एक केतली, एक पुराना रेडियो, और शाम छह बजे से रात दस बजे तक चलने वाली एक अनौपचारिक संसद। यहाँ हर दिन बिहार का बजट बनता था, आयोग के चेयरमैन बदले जाते थे, कट ऑफ़ तय होते थे, और कभी कभी पूरी सरकार भी गिरा दी जाती थी।

इस संसद के स्थायी सदस्य थे। *जहानाबाद वाला पंकज, जो हर बात में "भाई" लगाता था। भोजपुर वाले मनीष भैया, जिन्हें सब "गुरुजी" कहते थे, क्योंकि वे छठी बार परीक्षा दे रहे थे और हर प्रश्न का इतिहास जानते थे। दरभंगा का सोनू, जिसके पास हर अफ़वाह सबसे पहले पहुँचती थी। और सीतामढ़ी का निशांत, जो BPSC के साथ साथ SSC, रेलवे और बैंक, सबका फ़ॉर्म भरता था।*

अमन जिस शाम पहली बार वहाँ बैठा, सोनू ने कुल्हड़ उठाते हुए घोषणा की, "सुनो सुनो! पक्की ख़बर है। इस बार प्रीलिम्स में करेंट अफ़ेयर्स से चालीस सवाल आएँगे। मेरे मामा के साले का दोस्त आयोग में चपरासी है।"

गुरुजी ने धीरे से चाय की चुस्की ली और बोले, "सोनू, तुम्हारे मामा के साले का दोस्त पिछले छह साल से आयोग में चपरासी है, और छह साल से उसकी हर ख़बर ग़लत निकली है। उस पर इतना भरोसा मत करो जितना अपने नोट्स पर करना चाहिए।"

सब हँस पड़े। पंकज ने अमन की पीठ पर हाथ मारा, "भाई, नए हो? यहाँ का पहला नियम सुन लो। गुरुजी की बात इतिहास है, सोनू की बात अफ़वाह है, और निशांत की बात हर नौकरी का विज्ञापन।"

निशांत ने तुरंत मोबाइल दिखाया, *"हँसो मत। ये देखो, बिहार पुलिस में दारोगा की वैकेंसी आई है। अमन, फ़ॉर्म भरोगे? बैकअप ज़रूरी है भाई।"*

**"बैकअप वाला कभी फ़्रंट पर नहीं पहुँचता," गुरुजी ने कहा। फिर थोड़ा रुककर जोड़ा, "पर बैकअप न रखने वाला कभी कभी सड़क पर पहुँच जाता है। दोनों बातें सच हैं। तय तुम्हें करना है।"**

अमन को उस शाम समझ आया कि यह टपरी सिर्फ़ चाय की जगह नहीं है। यह वह जगह है जहाँ लड़के अपना डर हँसी में छुपाते हैं। जहाँ परिणाम के बाद कोई नहीं पूछता "हुआ कि नहीं", बस चुपचाप एक कुल्हड़ और आगे बढ़ा देता है।

*बिरजू भैया ख़ुद भी कभी तैयारी करने आए थे। बारह साल पहले। "तीन बार प्रीलिम्स, एक बार मेन्स। फिर बाबूजी गुज़र गए, बहन की शादी करनी थी। किताब बेचकर केतली ख़रीद ली,"* वे हँसते हुए बताते। "अब रोज़ सैकड़ों अफ़सरों को चाय पिलाता हूँ। उनमें से कुछ सच में अफ़सर बन जाते हैं, और कभी कभी लौटकर चाय पीने भी आते हैं।"

रेडियो पर पुराना गाना बज रहा था। सोनू ने आसमान की तरफ़ देखकर कहा, "जिस दिन मेरा हो जाएगा न, उस दिन बिरजू भैया की पूरी टपरी को मटन खिलाऊँगा।"

"पहले कुल्हड़ का पैसा दे दो, मटन बाद में," बिरजू भैया ने कहा, और पूरी संसद ठहाकों से गूँज उठी।

उस रात कमरे पर लौटते हुए अमन ने सोचा, इस शहर में अकेले आया था, पर शायद अकेला नहीं रहूँगा। उसे नहीं पता था कि *यही दोस्त आने वाले सालों में उसकी सबसे बड़ी ताक़त भी बनेंगे और सबसे गहरा आईना भी।*

### अध्याय 3

# कोचिंग का बाज़ार

❖ ❖ ❖

पटना में पढ़ाई से पहले जो चीज़ मिलती है, वह है पर्चा। अमन को अगले ही दिन अशोक राजपथ पर दर्जनों लड़कों ने रंगीन पर्चे थमा दिए। *"सेलेक्शन की गारंटी", "100 में से 87 सेलेक्शन हमारे", "बिहार का नंबर वन संस्थान"।* हर पर्चे पर मुस्कुराते हुए टॉपरों की तस्वीरें थीं। अमन को बाद में पता चला कि वही चेहरे चार अलग अलग कोचिंग के पर्चों पर एक साथ मुस्कुरा रहे थे।

बोरिंग रोड के एक चमचमाते संस्थान में काउंसलर ने उसे AC केबिन में बिठाया। "देखिए, आप सही जगह आए हैं। हमारा इंटीग्रेटेड प्रोग्राम है, प्रीलिम्स, मेन्स, इंटरव्यू सब। फ़ीस बस पचासी हज़ार, आज जमा करेंगे तो दस हज़ार की छूट।"

पचहत्तर हज़ार रुपये। अमन के पिता की पूरी धान की फ़सल इतने में बिकती थी। उसने घर फ़ोन किया। पिताजी ने एक पल चुप रहकर कहा, "पढ़ाई में कंजूसी नहीं। भेज देते हैं।" अमन को बाद में माँ से पता चला कि वह पैसा माँ के कान के झुमके गिरवी रखकर आया था।

पहले दो महीने सब अच्छा चला। *क्लास में चार सौ लड़के, माइक पर गरजते सर, और हर लेक्चर के अंत में एक लाइन, "तुम लोग ही बिहार का भविष्य हो।" फिर अचानक इतिहास वाले सर ग़ायब हो गए। पता चला, उन्हें दूसरी कोचिंग ने दुगुनी तनख़्वाह पर ख़रीद लिया।* राजनीति विज्ञान के लिए एक नया लड़का आया, जो ख़ुद पिछले साल प्रीलिम्स में फ़ेल हुआ था।

अमन ने रिसेप्शन पर जाकर कहा, "सर, जो फ़ैकल्टी दिखाकर एडमिशन लिया था, वो तो हैं ही नहीं।"

रिसेप्शन वाली लड़की ने बिना ऊपर देखे कहा, "फ़ीस नॉन रिफ़ंडेबल है। रसीद पर लिखा है। पढ़ लीजिए।"

अगले साल उस संस्थान का बोर्ड बदल गया, नाम बदल गया, मालिक वही रहा। टेस्ट सीरीज़ के नाम पर बारह हज़ार और गए, जिसके आधे टेस्ट कभी हुए ही नहीं। *नोट्स के नाम पर फ़ोटोकॉपी की गई किताबें मिलीं, जिनमें 2015 के आँकड़े थे।*

उस रात अमन ने डायरी में लिखा, "पटना में सबसे बड़ा उद्योग शिक्षा नहीं, उम्मीद बेचना है। और हम जैसे लड़के उसके सबसे वफ़ादार ग्राहक हैं।"

फिर उसने तय किया कि अब वह किसी पर्चे के पीछे नहीं भागेगा। भिखना पहाड़ी की एक सेल्फ़ स्टडी लाइब्रेरी में आठ सौ रुपये महीने पर एक सीट ली, NCERT की किताबें ख़रीदीं, और पुराने प्रश्नपत्रों को अपना गुरु बना लिया। ठगे जाने के बाद आदमी या तो टूट जाता है, या थोड़ा और समझदार हो जाता है। अमन ने दूसरा रास्ता चुना, पर वह घाव कभी पूरा नहीं भरा।

## अध्याय 4

# लाइब्रेरी की तीसरी कतार

❖ ❖ ❖

लाइब्रेरी में चालीस सीटें थीं, हर सीट पर एक सपना और हर सपने के पास एक पानी की बोतल। वहाँ कोई किसी से बात नहीं करता था, फिर भी सब एक दूसरे को जानते थे। कौन कितने बजे आता है, कौन किस विषय से डरता है, किसकी आँखें परिणाम के बाद लाल रहती हैं।

तीसरी कतार की सातवीं सीट पर एक लड़की बैठती थी। सफ़ेद दुपट्टा, हाथ में हमेशा लक्ष्मीकांत की मोटी किताब, और पेंसिल से हाशिए पर छोटे छोटे नोट्स। *उसका नाम श्रुति था। बेगूसराय की थी।* अमन को यह सब उसके नाम की पर्ची से पता चला, जो एक दिन उसकी किताब से गिरकर अमन की सीट के नीचे आ गई थी।

"ये आपकी है?" अमन ने पर्ची बढ़ाते हुए पूछा।

श्रुति ने मुस्कुराकर कहा, "हाँ। और आप जो रोज़ अनुच्छेद 356 पर अटकते हैं, वो मैंने देखा है।"

अमन झेंप गया। उस दिन पहली बार उसे लगा कि इस शहर में कोई उसे देख भी रहा है।

फिर चाय की टपरी पर बातें होने लगीं। अशोक राजपथ की भीड़ में दो कुल्हड़, दो कुर्सियाँ और ढेर सारे सवाल। "संघवाद पर लिखेंगे तो सरकारिया आयोग ज़रूर डालिए।" "बिहार विशेष में चंपारण सत्याग्रह पर एक बढ़िया उत्तर बनाइए।" बहस होती, नोट्स बदलते, और कब बातें किताबों से निकलकर ज़िंदगी तक पहुँच गईं, किसी को पता नहीं चला।

एक शाम गंगा किनारे काली घाट पर बैठे हुए श्रुति ने पूछा, "अमन, अगर कभी नहीं हुआ तो?"

**"होगा," अमन ने कहा। "और जिस दिन होगा, उस दिन मैं सबसे पहले तुम्हें बताऊँगा, फिर माँ को।"**

**"माँ को पहले बताना," श्रुति हँसी, "माँ का हक़ पहले है।"**

गंगा की लहरें चुपचाप बह रही थीं। सूरज डूब रहा था, और अमन को लगा कि अब उसके सपने में एक और नाम जुड़ गया है। उस रात उसने दीवार वाले काग़ज़ के कोने में बहुत छोटे अक्षरों में लिखा, "श्रुति"। फिर डर के मारे उस पर दूसरा काग़ज़ चिपका दिया।

प्यार और प्रतियोगिता एक ही कमरे में रहते हैं, पर दोनों को अलग अलग चीज़ें चाहिए। प्यार को समय चाहिए, और प्रतियोगिता को पूरा का पूरा आदमी। अमन यह बात तब नहीं जानता था।

## अध्याय 5

# गंगा घाट की शामें

❖ ❖ ❖

*लाइब्रेरी से निकलने के बाद श्रुति और अमन की शामें धीरे धीरे गंगा के घाटों पर बीतने लगीं।* कभी काली घाट, कभी कलेक्टरेट घाट, कभी गांधी घाट। गंगा की धारा अब पहले जैसी पास नहीं बहती थी, बीच में रेत का एक लंबा मैदान आ गया था, पर शाम की हवा में वही पुरानी ठंडक थी।

*"पता है अमन," श्रुति ने एक शाम कहा, "मेरी नानी कहती थीं कि गंगा किनारे जो वादा किया जाए, वह टूटता नहीं।"*

*"तो चलो, एक वादा करते हैं," अमन ने कहा। "जिस दिन मेरा या तुम्हारा चयन होगा, हम सबसे पहले यहीं आएँगे, इसी सीढ़ी पर बैठेंगे, और दो कुल्हड़ चाय पिएँगे।"*

*"और अगर दोनों का एक साथ हो गया तो?"*

*"तो चार कुल्हड़," अमन हँसा।*

श्रुति ने रेत पर उँगली से कुछ लिखा। अमन ने झाँककर देखा, "SDM अमन"। उसके नीचे छोटे अक्षरों में लिखा था, "और उसकी सबसे बड़ी आलोचक, श्रुति"।

*उन दिनों अमन को लगता था कि ज़िंदगी में सब कुछ सही दिशा में जा रहा है। सुबह किताबें, दोपहर लाइब्रेरी, शाम श्रुति, और रात को डायरी में लिखे हुए छोटे छोटे सपने।* प्रेम ने उसकी पढ़ाई को कमज़ोर नहीं किया था, बल्कि उसे एक वजह दे दी थी। जब भी वह थककर किताब बंद करना चाहता, उसे श्रुति की आवाज़ याद आती, "अमन, तुम जो हो, वही काफ़ी हो, पर तुम जो बन सकते हो, वह और भी सुंदर है।"

एक शाम बारिश हो गई। दोनों एक पुराने मंदिर की छत के नीचे खड़े थे। श्रुति ने भीगे हुए बालों को समेटते हुए पूछा, *"अमन, अगर हमारे घर वाले नहीं माने तो?"*

अमन ने बारिश की बूँदों को देखते हुए कहा, "तो मैं इतना बड़ा बनूँगा कि वे मना न कर सकें।"

श्रुति कुछ नहीं बोली। उसने बस अमन का हाथ थोड़ी देर के लिए पकड़ा और फिर छोड़ दिया। उस स्पर्श में भरोसा भी था और एक अनकहा डर भी।

टपरी पर जब यह बात फैली, तो संसद ने विशेष सत्र बुलाया। सोनू ने घोषणा की, "माननीय सदस्यो, सूचना मिली है कि अमन बाबू गंगा किनारे संविधान के अलावा कुछ और भी पढ़ रहे हैं!"

"सोनू, तेरी ख़बरें हमेशा ग़लत होती हैं," अमन ने झेंपते हुए कहा।

"इस बार नहीं भाई! इस बार मैंने ख़ुद देखा है," सोनू ने हाथ उठाकर क़सम खाई।

गुरुजी ने मुस्कुराते हुए चाय की चुस्की ली। "अमन, प्रेम करना कोई अपराध नहीं। बस इतना ध्यान रखना कि प्रेम तुम्हारी ताक़त बने, बहाना न बने। इस शहर में बहुत से लड़के प्रेम में भी हारे और परीक्षा में भी, क्योंकि उन्होंने दोनों को एक दूसरे का दुश्मन बना दिया।"

अमन उस रात देर तक सोचता रहा। उसे लगता था कि वह दोनों को साध लेगा। प्रेम भी, परीक्षा भी। उसे नहीं पता था कि समय सबसे बड़ा परीक्षक होता है, और वह किसी को दोनों विषयों में पूरे अंक नहीं देता।

## अध्याय 6

# 30 सितंबर, पहला युद्ध

❖ ❖ ❖

67वीं की प्रारंभिक परीक्षा पहले मई 2022 में हुई थी। अमन ने उस दिन बहुत अच्छा पेपर दिया था। शाम को कमरे में लौटा तो मोबाइल पर ख़बर चल रही थी, "BPSC पेपर लीक, परीक्षा रद्द।"

वह देर तक बिस्तर पर बैठा रहा। पंकज, जो बगल के कमरे में रहता था और जहानाबाद से आया था, दरवाज़े पर खड़ा होकर बोला, "भाई, मेहनत हमारी, और बिक गया पेपर किसी और के हाथ। यही बिहार है।"

"नहीं पंकज," अमन ने धीरे से कहा, "यही परीक्षा है। एक बार और सही।"

फिर तारीख़ आई, 30 सितंबर 2022। उस सुबह अमन चार बजे उठा। माँ का फ़ोन आया, "दही चीनी खाकर जाना बेटा।" उसने हँसकर कहा, "माँ, यहाँ दही कहाँ मिलेगा?" और फिर नीचे की दुकान से दही ख़रीदकर लाया, क्योंकि माँ की बात टालने की हिम्मत उसमें नहीं थी।

परीक्षा केंद्र के बाहर हज़ारों लड़के थे। किसी के हाथ में एडमिट कार्ड, किसी के हाथ में हनुमान चालीसा। गेट खुला तो भीड़ ऐसे दौड़ी जैसे आख़िरी ट्रेन छूट रही हो। दो घंटे बाद जब अमन बाहर निकला तो उसका हाथ काँप रहा था, पर दिल कह रहा था, "हो जाएगा।"

और हो गया। प्रारंभिक का परिणाम आया तो रोल नंबर सूची में था। अमन ने सबसे पहले माँ को फ़ोन किया, फिर श्रुति को। माँ रो पड़ीं। पिताजी ने फ़ोन लेकर बस इतना कहा, "शाबाश। अब असली लड़ाई है।"

असली लड़ाई सच में असली निकली। मुख्य परीक्षा के लिए अमन ने दिन रात एक कर दिए। उत्तर लेखन, निबंध, बिहार का इतिहास, अर्थव्यवस्था के आँकड़े। उँगलियों में छाले पड़ गए। रात में सपने में भी वह अनुच्छेद लिखता था।

*फिर परिणाम आया। अमन ने वेबसाइट खोली, PDF डाउनलोड हुई, उसने Ctrl F दबाया और अपना रोल नंबर टाइप किया।*

**"0 of 0 Result Found"**

स्क्रीन पर बस यही लिखा था। शून्य में से शून्य। कोई परिणाम नहीं मिला। उसने तीन बार टाइप किया, तीन बार वही जवाब। उसे लगा, उसकी पूरी एक साल की ज़िंदगी भी शायद इसी तरह कहीं खो गई है, शून्य में से शून्य।

उस रात उसने खाना नहीं खाया। माँ का फ़ोन आया तो बोला, "खा लिया माँ।" यह उसका पहला झूठ था। बाद में यह झूठ इतना आदत बन गया कि सच बोलना ही अजीब लगने लगा।

## अध्याय 7

# डेढ़ नंबर का फ़ासला

❖ ❖ ❖

68वीं की प्रारंभिक परीक्षा फ़रवरी 2023 में थी। अमन ने सोचा, अब तो अनुभव है, अब तो आसान होगा। पर प्रतियोगी परीक्षा में अनुभव कभी गारंटी नहीं होता, बस एक और डर होता है।

परिणाम वाले दिन लाइब्रेरी में सन्नाटा था। हर कोई मोबाइल में झुका था। किसी की चीख़ निकली, "हो गया!" और किसी की साँस अटक गई। अमन ने अपना स्कोर मिलाया। कट ऑफ़ से डेढ़ नंबर कम।

डेढ़ नंबर। एक सवाल, जिसमें उसने दो विकल्पों में से ग़लत वाला चुना था। एक पल, एक पेंसिल, एक गोला, और पूरा साल ख़त्म।

श्रुति ने उसे चाय की टपरी पर बुलाया। "अमन, डेढ़ नंबर से कोई हारता नहीं। ये बस बता रहा है कि तुम बहुत क़रीब हो।"

"क़रीब होना और पहुँचना, दोनों में बहुत फ़र्क़ है श्रुति," अमन ने कुल्हड़ को घूरते हुए कहा। "जो डेढ़ नंबर से छूटता है, उसे पूरी ज़िंदगी वो डेढ़ नंबर याद रहता है।"

उसी साल के आख़िर में 67वीं का अंतिम परिणाम आया। रवि, जो अमन के साथ उसी कोचिंग में पढ़ता था और जिसके साथ उसने रात रात भर उत्तर लिखने का अभ्यास किया था, अधिकारी बन गया।

रवि का फ़ोन आया, "भाई, हो गया! तुम्हारे बिना ये नहीं होता। पार्टी पक्की है।"

*"बधाई हो भाई," अमन ने पूरे दिल से कहा, और सच में उसे ख़ुशी हुई। पर फ़ोन रखते ही कमरे की दीवारें उसे घूरने लगीं। ख़ुशी और जलन एक साथ कैसे रह सकती हैं, यह उसे उसी रात समझ आया।*

रवि की पार्टी में अमन गया, पर एक कोने में बैठा रहा। *लोग रवि को घेरकर खड़े थे, "सर, सर" कह रहे थे। कल तक जो लड़का उसके साथ लिट्टी चोखा खाता था, आज उसके चारों तरफ़ एक अदृश्य घेरा था। अमन ने महसूस किया कि सेलेक्शन सिर्फ़ नौकरी नहीं देता, वह लोगों की आँखें भी बदल देता है।*

लौटते हुए गांधी मैदान के पास वह देर तक खड़ा रहा। बिस्कोमान भवन की बत्तियाँ जल रही थीं। उसने आसमान की तरफ़ देखकर कहा, "एक बार, बस एक बार मेरा भी नाम आ जाए।" आसमान ने कोई जवाब नहीं दिया। पटना का आसमान वैसे भी धुएँ से भरा रहता है, उसे लड़कों की प्रार्थनाएँ कहाँ सुनाई देती हैं।

## अध्याय 8

# कैलेंडर पर लाल निशान

❖ ❖ ❖

डेढ़ नंबर से छूटने के बाद अमन ने समय गिनना शुरू किया। पहले वह पढ़ाई के घंटे गिनता था, अब वह दिन गिनने लगा।

दीवार पर एक बड़ा कैलेंडर टाँगा गया। हर रात सोने से पहले वह उस दिन पर लाल पेन से क्रॉस लगाता। एक, दो, तीन… महीने के अंत तक पूरा पन्ना लाल हो जाता, जैसे किसी ने दिनों को ज़ख़्म दे दिए हों।

मेज़ पर रखी डायरी के पहले पन्ने पर उसने एक हिसाब लिखा था, जिसे वह हर महीने अपडेट करता:

**"पटना में बिताए दिन: 730. पढ़ाई के घंटे: लगभग 6,100. कोचिंग और टेस्ट सीरीज़ पर ख़र्च: 1,02,000 रुपये। किराया: 72,000 रुपये। घर गए: 2 बार। माँ से झूठ बोले: गिनती छोड़ दी।"**

पंकज ने एक दिन वह पन्ना पढ़ लिया। "भाई, तू तो अकाउंटेंट बन गया है। ये गिनती बंद कर। समय गिनने से समय नहीं रुकता, बस डर बढ़ता है।"

"समय गिनता नहीं हूँ पंकज, ख़ुद को याद दिलाता हूँ कि कितना दाँव पर लगा है," अमन ने कहा।

पर सच यह था कि गिनती अब उसकी नींद खा रही थी। रात को वह छत पर जाकर बैठता और मन ही मन हिसाब लगाता। *"उम्र 26. सामान्य वर्ग के पुरुष के लिए अधिकतम सीमा 37. यानी अभी बहुत समय है।" फिर दूसरा हिसाब शुरू होता। "पर बाबूजी 58 के हो गए। माँ के घुटनों में दर्द रहता है। छोटी बहन 21 की हो गई। शादी की बातें होने लगी हैं। क्या मेरे पास सच में इतना समय है?"*

*उम्र की सीमा कागज़ पर होती है, पर घर की उम्र हर फ़ोन कॉल में सुनाई देती है।*

गुरुजी ने एक शाम टपरी पर उसे समझाया, "अमन, इस शहर में दो घड़ियाँ चलती हैं। एक आयोग की घड़ी है, जो अपनी मर्ज़ी से चलती है, कभी तेज़, कभी रुक जाती है। दूसरी घर की घड़ी है, जो कभी नहीं रुकती। जो लड़का आयोग की

घड़ी देखकर जीता है, वह पागल हो जाता है। जो घर की घड़ी देखकर जीता है, वह टूट जाता है। बचता वही है जो अपनी घड़ी बनाता है।"

"अपनी घड़ी मतलब?"

"मतलब आज का दिन। बस आज का दिन। कल का कट ऑफ़ और परसों का परिणाम आज की पढ़ाई से बड़ा नहीं है।"

उस रात अमन ने कैलेंडर से लाल क्रॉस लगाना बंद कर दिया। उसकी जगह उसने हर दिन के खाने में एक छोटा सा हरा टिक लगाना शुरू किया, उस दिन जो पढ़ा, उसका निशान। लाल निशान बीते दिनों का हिसाब थे, हरे निशान आने वाले कल की नींव।

फिर भी कभी कभी, किसी उदास रात में, उसकी उँगलियाँ अपने आप गिनने लगतीं। *एक साल, दो साल, तीन साल... और हर गिनती के अंत में एक ही सवाल उठता, "और कितना?"*

### अध्याय 9

# पटना की पहली होली

❖ ❖ ❖

मार्च आया तो पूरे पटना में फगुआ की हवा चलने लगी। गली के कोनों पर गुलाल की दुकानें सज गईं, ढोलक की थाप सुनाई देने लगी। पर अमन उस साल भी घर नहीं गया। मुख्य परीक्षा पास थी, और घर जाने का मतलब था कम से कम पाँच दिन किताबों से दूर रहना।

होली की सुबह पंकज ने दरवाज़ा पीटा, "भाई, बाहर निकल! आज पढ़ाई बंद। आज संविधान का अनुच्छेद 19 लागू है, अभिव्यक्ति की आज़ादी, रंगों के साथ!"

अमन ने मना किया, पर पंकज कहाँ मानने वाला था। देखते ही देखते सोनू, निशांत और गुरुजी भी छत पर आ गए। किसी के हाथ में बाल्टी थी, किसी के हाथ में गुलाल। पाँच मिनट में अमन का चेहरा हरा, नीला और गुलाबी हो चुका था।

सोनू ने एक स्टील की थाली को ढोलक बना लिया और फगुआ की तान छेड़ दी। गुरुजी, जो साल भर गंभीर रहते थे, उस दिन सबसे ज़्यादा नाचे। उन्होंने बताया, "हमारे गाँव में होली के दिन जोगीरा गाते थे। उसमें सबकी पोल खोली जाती थी, मुखिया की भी, दरोगा की भी। उस दिन कोई बुरा नहीं मानता था।"

"तो आज आयोग की पोल खोलिए गुरुजी!" निशांत चिल्लाया।

गुरुजी ने गला साफ़ किया और ताल पर गाने लगे, "प्रीलिम्स में आए सवाल, जिनका न सिर न पैर, कट ऑफ़ ऊपर चढ़ गया, अपनी किस्मत ढेर! जोगीरा सा रा रा रा!" पूरी छत ठहाकों से गूँज उठी। नीचे से शर्मा जी की आवाज़ आई, "धीरे बाबू लोग, छत गिर जाएगी!" और फिर वे भी रंग लगवाने ऊपर चले आए।

दोपहर को सब थककर छत पर बैठ गए। मालपुए नहीं थे, पर राधे भैया ने मेस से पूड़ी और आलू दम भिजवा दिया था। तभी अमन का फ़ोन बजा। माँ का वीडियो कॉल था।

स्क्रीन पर आँगन दिख रहा था। पिताजी के चेहरे पर गुलाल लगा था, छोटी बहन रानी ने रंगीन चुन्नी ओढ़ रखी थी, और माँ के हाथ में मालपुए की थाली थी। "देख, तेरे हिस्से के मालपुए रख दिए हैं। जब आएगा, खाएगा।"

अमन ने हँसते हुए अपना रंगा हुआ चेहरा दिखाया, "देखो माँ, यहाँ भी होली हुई।"

माँ हँसीं, फिर अचानक चुप हो गईं। "अगले साल घर पर खेलना बेटा। तेरे बिना आँगन सूना लगता है।"

कॉल कटने के बाद अमन देर तक छत की मुंडेर पर बैठा रहा। दोस्त हँस रहे थे, गा रहे थे, पर उसके भीतर कहीं एक ख़ाली कोना था, जिसे पटना का कोई रंग नहीं भर सकता था। गुरुजी उसके पास आकर बैठे।

*"घर की याद आ रही है?"*

*"हर त्योहार पर लगता है, अगली बार। पर अगली बार कब आएगी गुरुजी?"*

गुरुजी ने आसमान की तरफ़ देखा। "अगली बार हमेशा आएगी, अमन। बस यह ध्यान रखना कि उस अगली बार के इंतज़ार में यह बार पूरी तरह ख़त्म न हो जाए। आज तुम हँसे, नाचे, रंग लगाया। यह भी ज़िंदगी है। परीक्षा इसके बीच में है, इसके ऊपर नहीं।"

उस रात अमन ने डायरी में लिखा, "आज पहली बार लगा कि पटना सिर्फ़ परीक्षा का शहर नहीं, दोस्ती का भी शहर है। माँ के मालपुए का इंतज़ार रहेगा, पर आज के गुलाल का रंग भी याद रहेगा।"

## अध्याय 10

# परिणाम की रात

❖ ❖ ❖

पटना में परिणाम की रात किसी त्योहार की रात जैसी होती है, बस फ़र्क़ इतना है कि इस त्योहार में मिठाई कम और धड़कनें ज़्यादा बँटती हैं।

*शाम सात बजे से ही टेलीग्राम पर मैसेज आने लगते। "आज रात रिज़ल्ट पक्का।" "सर्वर पर फ़ाइल अपलोड हो रही है।" "किसी ने आयोग के बाहर गाड़ियाँ देखी हैं।" सोनू हर दस मिनट में नई ख़बर लाता और हर ख़बर के साथ कमरे का तापमान एक डिग्री बढ़ जाता।*

उस रात सब पंकज के कमरे में जमा थे। फ़र्श पर चटाई, बीच में मैगी का बड़ा भगौना, चार मोबाइल चार्जर से लटके हुए, और हर दो मिनट पर कोई न कोई आयोग की वेबसाइट रिफ़्रेश करता।

"भाई, सर्वर डाउन है!" निशांत चिल्लाया।

"सर्वर नहीं, तेरी किस्मत डाउन है," पंकज ने कहा, और सब हँस पड़े। हँसी इसलिए ज़रूरी थी, क्योंकि अगर कोई हँसता नहीं, तो सबको अपनी साँसों की आवाज़ सुनाई देने लगती।

रात ग्यारह बजे गुरुजी ने एक पुरानी आदत दोहराई। उन्होंने सबसे कहा, "चलो, अपने अपने डर बोलो। जो डर बोल दिया जाता है, वह आधा हो जाता है।"

सोनू बोला, "मेरा डर ये है कि अगर इस बार नहीं हुआ तो पापा गाँव में चेहरा कैसे दिखाएँगे।"

निशांत बोला, "मेरा डर ये है कि अगर हो गया तो मैं ख़ुद को पहचान पाऊँगा या नहीं। इतने साल से एक ही आदमी हूँ, अभ्यर्थी।"

पंकज बोला, "मेरा डर ये है कि मैगी ठंडी हो जाएगी।" फिर थोड़ा रुककर गंभीर होकर बोला, "और ये कि हम लोग ऐसे ही बूढ़े हो जाएँगे, किसी की शादी में नहीं जाएँगे, किसी के घर नहीं जाएँगे, बस एक PDF का इंतज़ार करते रहेंगे।"

अमन की बारी आई। उसने खिड़की से बाहर देखा। "मेरा डर ये है कि एक दिन माँ फ़ोन पर ये पूछना बंद कर देगी कि रिज़ल्ट कब आएगा। उस दिन मुझे लगेगा कि उसने उम्मीद छोड़ दी है।"

*कमरे में सन्नाटा छा गया। केवल पंखे की खड़खड़ और मैगी के भगौने से उठती भाप।*

रात दो बजकर सात मिनट पर फ़ाइल आई। चारों ने एक साथ मोबाइल उठाए। उँगलियाँ काँप रही थीं, स्क्रीन धुँधली लग रही थी। एक के बाद एक, चार लड़कों ने अपना रोल नंबर टाइप किया।

किसी के चेहरे पर रोशनी आई, किसी के चेहरे से रंग उड़ गया। उस रात कौन जीता, कौन हारा, यह उतना ज़रूरी नहीं था जितना यह कि सुबह होने तक चारों एक ही चटाई पर बैठे रहे। जो जीता, उसने अपनी ख़ुशी धीमी रखी। जो हारा, उसका सिर किसी के कंधे पर था।

सुबह पाँच बजे गुरुजी ने बालकनी में जाकर सूरज की तरफ़ देखा और कहा, "देखो, सूरज फिर निकला। उसे हमारे रिज़ल्ट से कोई मतलब नहीं। यही सबसे बड़ी तसल्ली है।"

*पटना में हर परिणाम की रात ऐसी ही बीतती है। सैकड़ों कमरों में, हज़ारों लड़कों के बीच। कुछ उस रात अफ़सर बन जाते हैं, बाक़ी सब थोड़े और बड़े हो जाते हैं।*

## अध्याय 11

# मकान मालिक, मेस और बिजली का बिल

❖ ❖ ❖

तीसरी मंज़िल के उस कमरे की अपनी एक अलग दुनिया थी। मकान मालिक शर्मा जी हर महीने की पाँच तारीख़ को सीढ़ियों पर खाँसते हुए चढ़ते, और उनकी खाँसी सुनकर ही पूरी मंज़िल के लड़के समझ जाते कि किराया माँगने आए हैं।

*"अमन बाबू, इस महीने बिजली का बिल ज़्यादा आया है। रात भर लाइट जलाते हो क्या?"*

*"चाचा, पढ़ाई रात में ही होती है।"*

*"पढ़ाई ठीक है, पर मीटर पढ़ाई नहीं समझता बेटा," शर्मा जी हँसते। फिर धीरे से जोड़ते, "मेरा बेटा भी पढ़ता था। अब बेंगलुरु में है। साल में एक बार आता है। तुम लोग अफ़सर बनकर पटना में ही रहना, बाहर मत भागना।"*

नीचे की गली में राधे भैया का मेस था। बत्तीस सौ रुपये महीना, दो वक़्त का खाना। दाल ऐसी कि उसमें दाना ढूँढना पड़ता, और सब्ज़ी हर दिन आलू, बस नाम बदलता। सोमवार को आलू गोभी, मंगलवार को आलू बैंगन, बुधवार को आलू परवल, और रविवार को "स्पेशल", यानी आलू पनीर, जिसमें पनीर कम और उम्मीद ज़्यादा होती।

पंकज कहता, "भाई, अगर कभी BPSC में आलू पर निबंध आया न, तो हम दोनों टॉप करेंगे।"

रात में जब मेस बंद हो जाता, तो कमरे में बिस्कुट और सत्तू ही सहारा थे। माँ जब भी किसी आते जाते के हाथ ठेकुआ भेजतीं, तो पूरी मंज़िल पर जश्न होता। हर लड़के को दो ठेकुआ मिलते, और हर लड़का कहता, "अपनी माँ के हाथ का स्वाद आ गया।" किसी की माँ समस्तीपुर में थी, किसी की जहानाबाद में, किसी की मधुबनी में, पर ठेकुए का स्वाद सबकी माँओं का एक जैसा था।

गर्मियों में पंखा गरम हवा फेंकता और कमरा तंदूर बन जाता। लड़के छत पर चटाई बिछाकर सोते। ऊपर तारे होते, नीचे गली का शोर, और बीच में बातें।

बरसात में सीढ़ियों"भाई, अफ़सर बनने के बाद सबसे पहले क्या करेगा?" "AC लगवाऊँगा।" "मैं माँ को हवाई जहाज़ में बिठाऊँगा।" "मैं इस छत पर एक बार फिर आऊँगा और यहीं सोऊँगा, बस ये देखने के लिए कि कहाँ से चला था।" से पानी टपकता और किताबें प्लास्टिक में लपेटकर रखनी पड़तीं। सर्दियों में रज़ाई में घुसकर पढ़ना पड़ता, और उँगलियाँ इतनी ठंडी हो जातीं कि पेन पकड़ना मुश्किल हो जाता।

हर मौसम ने उस कमरे में अमन की परीक्षा ली। और हर मौसम में वह कमरा, अपनी टूटी खिड़की और खड़खड़ाते पंखे के साथ, उसकी ढाल बना रहा। कई बार अमन को लगता कि अगर कभी उसका चयन हुआ, तो उसका आधा श्रेय इस कमरे को जाएगा, जिसने बिना कुछ कहे उसके सारे आँसू सोख लिए।

### अध्याय 12

# यूट्यूब के गुरु और टेलीग्राम की अफ़वाहें

❖ ❖ ❖

पाँच साल में अमन ने तैयारी की दुनिया को बदलते देखा। पहले कोचिंग के पर्चे थे, अब यूट्यूब के थंबनेल थे। "BPSC टॉपर की स्ट्रेटेजी, बस 90 दिन में", "बिना कोचिंग SDM कैसे बने", "ये गलती की तो कभी सेलेक्शन नहीं होगा"। हर थंबनेल पर एक हैरान चेहरा और लाल तीर।

रात को सोने से पहले अमन "बस एक वीडियो" देखने बैठता, और फिर एक के बाद एक वीडियो चलते रहते। किसी टॉपर ने कहा, "मैं रोज़ चौदह घंटे पढ़ता था।" किसी ने कहा, "मैंने सिर्फ़ आठ घंटे पढ़ाई की।" किसी ने कहा, "NCERT ही काफ़ी है।" किसी ने कहा, "NCERT बिल्कुल बेकार है।" *सुबह जब वह उठता, तो उसके पास बीस रणनीतियाँ होतीं और एक भी पूरा अध्याय नहीं।*

टेलीग्राम पर पचास ग्रुप थे। "BPSC Flana", "Bihar Special Chilana", "72वीं के योद्धा"। हर ग्रुप में हज़ारों सदस्य, और हर घंटे सैकड़ों मैसेज। कोई "लीक" पेपर का दावा कर रहा था, कोई आयोग पर ग़ुस्सा निकाल रहा था, और कोई बस इतना लिख रहा था, "क्या कोई और भी है जो आज बहुत अकेला महसूस कर रहा है?"

सोनू इन ग्रुपों का राजा था। टपरी पर आते ही वह मोबाइल निकालता, *"सुनो, आयोग ने नया पैटर्न तय किया है।" "सुनो, इस बार इंटरव्यू में 50 नंबर कम होंगे।" "सुनो, फलाने सर ने कहा है कि इस बार निबंध बिहार पर आएगा।"*

गुरुजी हर बार एक ही बात कहते, "सोनू, आयोग की आधिकारिक वेबसाइट पर जो लिखा है, वही सच है। बाक़ी सब कहानी है। और कहानियाँ परीक्षा में अंक नहीं दिलातीं।"

इंस्टाग्राम पर एक और दुनिया थी। स्कूल के दोस्त गोवा की तस्वीरें डाल रहे थे, कोई नई कार के साथ खड़ा था, कोई बेंगलुरु के ऑफ़िस से "Monday Motivation" लिख रहा था। रवि की हर पोस्ट में सरकारी गाड़ी दिखती, नीली बत्ती तो नहीं, पर बोर्ड पर लिखा पद ज़रूर।

अमन घंटों स्क्रोल करता और फिर अपने कमरे की दीवारें देखता। उसे लगता, पूरी दुनिया आगे बढ़ रही है और वह एक ही जगह खड़ा है, जैसे किसी ट्रेडमिल पर दौड़ रहा हो। पसीना बहुत, दूरी शून्य।

एक दिन उसने अपना स्क्रीन टाइम देखा। रोज़ के साढ़े छह घंटे। उसने हिसाब लगाया, पाँच साल में लगभग बारह हज़ार घंटे। "इतने घंटों में तो दो बार पूरी तैयारी हो जाती," उसने ख़ुद से कहा।

उस रात उसने एक कठिन फ़ैसला लिया। उसने इंस्टाग्राम हटाया, यूट्यूब पर सिर्फ़ दो चैनल छोड़े, और टेलीग्राम के पचास में से अड़तालीस ग्रुप छोड़ दिए।

पहले तीन दिन बहुत बेचैनी रही। हाथ बार बार मोबाइल की तरफ़ जाता, जैसे कोई आदत नहीं, कोई नशा हो। फिर धीरे धीरे मन शांत होने लगा। Notes के अक्षर फिर से साफ़ दिखने लगे।

पंकज ने पूछा, "भाई, डिजिटल संन्यास ले लिया?"

*"नहीं पंकज," अमन ने कहा, "बस समझ आया कि हर टॉपर की कहानी उसकी अपनी होती है। मुझे अपनी कहानी लिखनी है, किसी और की नक़ल नहीं करनी।"*

*उस दिन टपरी पर बिरजू भैया ने रेडियो बंद किया और कहा, "हम जब पढ़ते थे, तो बस एक रेडियो था और एक अख़बार। आज तुम लोगों के पास पूरी दुनिया की जानकारी है, फिर भी तुम लोग पहले से ज़्यादा उलझे हुए हो। जानकारी और ज्ञान में यही फ़र्क़ है बाबू।"*

## अध्याय 13

# न्योते जो लौटा दिए गए

❖ ❖ ❖

जैसे जैसे साल बीतते गए, अमन की दुनिया सिकुड़ती गई। पहले मोहल्ले के दोस्त छूटे, फिर गाँव के त्योहार, फिर रिश्तेदारों की शादियाँ।

चचेरी बहन की शादी का कार्ड आया। माँ ने फ़ोन किया, "आ जाओ बेटा, सब पूछ रहे हैं।"

*"माँ, मेन्स की तैयारी चल रही है। अगली बार आऊँगा।"*

*"अगली बार कौन सी शादी होगी रे?" माँ ने हँसते हुए कहा, पर उस हँसी में एक दर्द था जो अमन तक पहुँच गया।*

सच यह नहीं था कि उसके पास समय नहीं था। सच यह था कि उसके पास जवाब नहीं थे। *शादी में जाने का मतलब था हर चाचा, हर मौसी, हर पड़ोसी का एक ही सवाल सुनना, "क्या हुआ बउआ, अभी तक नहीं निकला?"* और फिर वह दया भरी मुस्कान, जो किसी गाली से ज़्यादा चुभती है।

छठ आया। पूरा बिहार घर लौट रहा था। ट्रेनें भरी थीं, बसों की छतों पर लोग बैठे थे। अमन ने उस साल भी टिकट नहीं कराया। कमरे की खिड़की से उसने गली में जाते लोगों को देखा, सिर पर दउरा, होठों पर गीत, "काँच ही बाँस के बहँगिया…"

उस रात माँ ने वीडियो कॉल किया। घाट पर पानी में खड़ी माँ, हाथ में सूप, और पीछे डूबता सूरज। "देख, तुम्हारे नाम का भी अर्घ्य दिया है। छठी मैया सब सुनती हैं।"

अमन ने कैमरा बंद कर दिया ताकि माँ उसके आँसू न देख सकें। "हाँ माँ, सुनती हैं।"

*व्हाट्सऐप पर स्कूल के दोस्तों का ग्रुप था। कोई बैंक में था, कोई रेलवे में, किसी की शादी हो गई थी, किसी के बच्चे का पहला जन्मदिन था। हर फ़ोटो के नीचे "बधाई हो" लिखते लिखते अमन थक गया।* एक दिन उसने ग्रुप को म्यूट कर दिया। फिर एक दिन चुपचाप ग्रुप छोड़ दिया।

अब उसकी दुनिया में बस तीन जगहें बचीं, कमरा, लाइब्रेरी और चाय की टपरी। और तीन आवाज़ें बचीं, माँ की, श्रुति की, और उसके भीतर की वह आवाज़ जो हर सुबह कहती थी, "उठ, आज भी लड़ना है।"

*कभी कभी उसे लगता कि वह परीक्षा की तैयारी नहीं कर रहा, बल्कि धीरे धीरे दुनिया से ग़ायब होने का अभ्यास कर रहा है।*

## अध्याय 14

# अंतिम सूची का दरवाज़ा

❖ ❖ ❖

69वीं ने अमन को सबसे ज़्यादा उम्मीद दी और सबसे गहरा घाव भी। प्रारंभिक निकली, मुख्य निकली, और पहली बार उसे साक्षात्कार का बुलावा आया।

*माँ ने गाँव में लड्डू बँटवा दिए। पिताजी ने पड़ोसियों से कहा, "बस इंटरव्यू बाक़ी है।" जो गाँव वाले कल तक ताने देते थे, वे अब कहने लगे, "हम तो पहले से जानते थे, रामबाबू का बेटा होशियार है।"*

इंटरव्यू के लिए अमन ने उधार के पैसों से एक नेवी ब्लू ब्लेज़र ख़रीदा। श्रुति ने टाई बाँधना सिखाया। "सीधे बैठना, आँखों में देखकर बोलना, और घबराना मत। तुम जो हो, वही काफ़ी हो।"

आयोग के कमरे में पाँच लोग बैठे थे। सवाल आए, "समस्तीपुर की कौन सी चीज़ आपको सबसे ज़्यादा प्रिय है?" अमन ने कहा, "वहाँ की मिट्टी, सर, जिसमें बाढ़ भी आती है और फिर भी धान उगता है।" एक सदस्य मुस्कुराए। अमन को लगा, बस, अब हो गया।

इंटरव्यू की तैयारी के दिनों में गुरुजी ने उसे एक मॉक इंटरव्यू में पूछा, "मान लो तुम्हारा कोई क़रीबी दोस्त ग़लत काम करते पकड़ा जाए, और फ़ैसला तुम्हारे हाथ में हो, तो?" अमन कुछ देर चुप रहा, फिर उसे प्रेमचंद की कहानी "पंच परमेश्वर" याद आई, जिसमें ख़ाला जुम्मन शेख़ के दोस्त अलगू चौधरी से पूछती है, "क्या बिगाड़ के डर से ईमान की बात न कहोगे?" अमन ने वही वाक्य दोहराया और कहा, "सर, पद पर बैठते ही दोस्ती और ईमान के बीच चुनना पड़े, तो मैं ईमान चुनूँगा, और फिर दोस्त से माफ़ी माँग लूँगा।" गुरुजी ने ताली बजाई, "बस, यही उत्तर असली परीक्षा में देना।"

*अंतिम परिणाम की रात वह सो नहीं पाया। रात दो बजे वेबसाइट पर PDF आई। अमन ने काँपती उँगलियों से रोल नंबर टाइप किया।*

**"0 of 0 Result Found"**

*फिर से वही शून्य। उसने अंक पत्र निकाला। अंतिम कट ऑफ़ से तीन अंक कम। तीन अंक। पूरे तीन साल की मेहनत, एक इंटरव्यू, एक नया ब्लेज़र, और गाँव में बँटे लड्डू, सब तीन अंकों के आगे हार गए।*

सुबह माँ का फ़ोन आया। अमन ने चार बार फ़ोन बजने दिया। पाँचवीं बार उठाया।

"क्या हुआ बेटा?"

अमन कुछ नहीं बोल पाया। बस एक लंबी साँस, फिर टूटी हुई आवाज़, "माँ… नहीं हुआ।"

उधर से कुछ देर कोई आवाज़ नहीं आई। फिर माँ ने कहा, "कोई बात नहीं। तू ठीक है न? बस यही चाहिए।"

*उस दिन अमन को समझ आया कि माँ की "कोई बात नहीं" दुनिया की सबसे भारी बात होती है, क्योंकि उसके पीछे माँ अपना पूरा दुख छुपा लेती है।*

उस शाम वह अकेला गोलघर की सीढ़ियाँ चढ़ा। ऊपर से पूरा पटना दिख रहा था, गंगा, पुल, रोशनी। उसने नीचे देखा और ख़ुद से कहा, *"अमन, गिरना हार नहीं है। गिरकर वहीं पड़े रहना हार है।"* फिर वह धीरे धीरे सीढ़ियाँ उतर आया, एक एक कदम, जैसे ज़िंदगी में वापस लौट रहा हो।

## अध्याय 15

# जब श्रुति चली गई

❖ ❖ ❖

जिस साल अमन तीन अंकों से छूटा, उसी साल श्रुति का शिक्षक भर्ती परीक्षा में चयन हो गया। वह बेगूसराय के एक सरकारी विद्यालय में पढ़ाने लगी। अमन बहुत ख़ुश था, सच में ख़ुश। उसने उसी टपरी पर दो कुल्हड़ चाय और एक समोसा मँगवाकर जश्न मनाया।

पर ख़ुशी के बाद जो ख़ामोशी आई, वह लंबी थी। श्रुति के फ़ोन कम होने लगे। बातें छोटी होने लगीं। एक दिन उसने कहा, "अमन, घर वाले रिश्ता देख रहे हैं।"

*"तो उन्हें बताओ न, कि..." अमन रुक गया। किसे बताए? क्या बताए? कि एक लड़का है, जो चार साल से एक कमरे में बैठा है, जिसकी कोई नौकरी नहीं, जिसके नाम के आगे बस "अभ्यर्थी" लिखा है?*

*"मैंने बताया था," श्रुति की आवाज़ भारी थी। "पापा ने पूछा, लड़का क्या करता है? मैंने कहा, तैयारी। उन्होंने कहा, तैयारी तो पूरा बिहार कर रहा है।"*

*कुछ देर दोनों चुप रहे। फ़ोन पर बस साँसों की आवाज़ थी।*

**"अमन, मैं तुमसे प्यार करती हूँ। पर मैं और इंतज़ार नहीं कर सकती। और मैं नहीं चाहती कि तुम मेरी वजह से हर परिणाम को ज़िंदगी और मौत बना लो।"**

**"एक साल श्रुति, बस एक साल और..."**

**"यही तो तुम हर साल कहते हो, अमन।"**

*वह वाक्य किसी तीर की तरह अमन के सीने में उतर गया। फ़ोन कट गया। उसने दोबारा मिलाया, पर उधर से कोई जवाब नहीं आया। कुछ महीनों बाद व्हाट्सऐप पर किसी दोस्त ने एक फ़ोटो भेजी। लाल जोड़े में श्रुति, माथे पर सिंदूर, आँखों में वही गहराई, पर किसी और के साथ।*

अमन ने दीवार से वह काग़ज़ उतारा, जिसके नीचे उसने कभी डरते डरते "श्रुति" लिखा था। काग़ज़ के पीछे का नाम अब भी वहीं था, धुँधला सा। उसने उसे फाड़ा नहीं। बस मोड़कर डायरी में रख दिया।

उस रात डायरी में उसने लिखा, "कुछ लोग ज़िंदगी में मंज़िल बनकर नहीं, सबक बनकर आते हैं। श्रुति ने मुझे सिखाया कि प्यार इंतज़ार माँगता है, और प्रतियोगिता क़ुर्बानी। मैं दोनों एक साथ नहीं दे पाया।"

अगली सुबह वह फिर लाइब्रेरी गया। तीसरी कतार की सातवीं सीट पर अब कोई और लड़की बैठी थी। अमन ने अपनी किताब खोली, पर अक्षर तैर रहे थे। उस दिन उसने कुछ नहीं पढ़ा। बस पढ़ने का नाटक किया, ताकि कोई उसे रोते हुए न देख ले।

## अध्याय 16

# दोस्तों की बदलती दुनिया

❖ ❖ ❖

समय के साथ टपरी की संसद के सदस्य बदलने लगे। सबसे पहले निशांत गया। उसका रेलवे में क्लर्क का चयन हो गया, और वह एक महीने में ही धनबाद चला गया।

जाने से पहले उसने सबको लिट्टी चोखा खिलाया। "भाई लोग, बुरा मत मानना। मैं हार मानकर नहीं जा रहा, घर बचाने जा रहा हूँ। बाबूजी का कर्ज़ बढ़ता जा रहा था।"

*"इसमें बुरा मानने वाली क्या बात है," गुरुजी ने उसकी पीठ थपथपाई। "हर लड़ाई जीतने के लिए नहीं, कुछ लड़ाइयाँ परिवार के लिए छोड़ी भी जाती हैं। और याद रखना, जिस दिन रेलवे की नौकरी से मन भर जाए, टपरी का दरवाज़ा खुला है।"*

छह महीने बाद निशांत की शादी का कार्ड आया। अमन ने कार्ड को देर तक देखा। उस पर लिखा था, "चि. निशांत संग सौ. काजल"। नीचे लिखा था, "आपकी उपस्थिति प्रार्थनीय है।" अमन ने कार्ड डायरी में रख दिया और उस दिन भी नहीं गया। निशांत का मैसेज आया, "भाई, तेरा इंतज़ार किया।" अमन ने जवाब लिखा, "माफ़ करना, मेन्स थी।" मेन्स नहीं थी। बस हिम्मत नहीं थी।

फिर सोनू की बारी आई। सोनू, जिसकी हर ख़बर ग़लत होती थी, उसकी अपनी ख़बर सही निकली। 69वीं में वह अधिकारी बन गया। पूरी टपरी झूम उठी। बिरजू भैया ने सच में उस दिन किसी से पैसे नहीं लिए।

*"देखा!" सोनू चिल्लाया, "मेरे मामा के साले का दोस्त सही था!"*

*"हाँ, छह साल में एक बार," गुरुजी ने कहा, और सबकी आँखें हँसते हँसते भीग गईं।*

उस रात सोनू ने अमन को गले लगाया। *"भाई, तू मुझसे ज़्यादा पढ़ता है। तू ज़्यादा डिज़र्व करता है। ये बात सच है, और मुझे पता है।" अमन मुस्कुराया, पर सोनू की बाँहों में खड़े खड़े उसे लगा कि उसके भीतर कुछ टूटकर चुपचाप गिर गया है।*

टपरी पर अब गॉसिप का विषय बदल गया था। "सुना, सोनू की पोस्टिंग गया में हुई है।" "रवि ने नई बुलेट ली है।" "निशांत की बीवी भी सरकारी टीचर है, डबल इनकम।" और फिर धीरे से, अमन की पीठ पीछे, "अमन का क्या होगा यार? इतना पढ़ता है, फिर भी।"

अमन ने यह फुसफुसाहट सुन ली थी। उस दिन उसे समझ आया कि लोग *आपको तब तक "होनहार" कहते हैं जब तक आप असफल नहीं होते, और असफल होने के बाद वही लोग आपको "बेचारा" कहने लगते हैं। होनहार से बेचारा बनने में बस तीन परिणाम लगते हैं।*

सबसे बड़ा झटका तब लगा जब गुरुजी ने भी टपरी छोड़ दी। छठे प्रयास के बाद वे भोजपुर लौट गए और गाँव में बच्चों के लिए एक छोटा सा कोचिंग सेंटर खोल लिया।

जाते समय उन्होंने अमन से कहा, "अमन, मैं हारकर नहीं जा रहा। मैं वहाँ जा रहा हूँ जहाँ मेरे होने से किसी को फ़र्क़ पड़े। तू भी एक दिन यह फ़ैसला करेगा। बस ध्यान रखना, वह फ़ैसला डर से नहीं, समझ से हो।"

उस रात टपरी पर सिर्फ़ अमन और पंकज बचे थे। दो कुल्हड़, एक केतली, और ख़ाली बेंचें। पंकज ने कहा, "भाई, संसद भंग हो गई।"

"नहीं पंकज," अमन ने कहा, "बस सत्र समाप्त हुआ है। अगला सत्र हम दोनों चलाएँगे।"

## अध्याय 17

# ट्यूशन, किराया और ताने

❖ ❖ ❖

*चौथे साल तक घर से पैसे माँगना अमन के लिए सबसे कठिन काम बन गया था। हर महीने की एक तारीख़ को वह फ़ोन उठाता, नंबर मिलाता, और फिर काट देता। उसे पता था कि पिताजी "हाँ" कहेंगे, पर उस "हाँ" के पीछे कौन सा खेत, कौन सा गहना, कौन सी दवा छूटेगी, यह भी उसे पता था।*

आख़िरकार उसने ट्यूशन पढ़ाना शुरू किया। कंकड़बाग में दो बच्चे, एक नौवीं में, एक दसवीं में। हर शाम साइकिल से सात किलोमीटर जाना, डेढ़ घंटे पढ़ाना, और फिर सात किलोमीटर लौटना। महीने के चार हज़ार रुपये। किराया निकल जाता, और थोड़ा सा आत्मसम्मान भी बच जाता।

दसवीं वाले बच्चे की माँ बहुत सलीक़े वाली थीं। हर दिन चाय और बिस्कुट भेजतीं। पर एक दिन, जब बच्चे के गणित में अंक कम आए, उन्होंने दरवाज़े पर खड़े खड़े कहा, *"सर, बुरा मत मानिएगा। आप ख़ुद तो इतने साल से निकल नहीं पाए, बच्चे को क्या रास्ता दिखाएँगे?"*

*वह वाक्य किसी थप्पड़ की तरह लगा।* अमन कुछ नहीं बोला। बस मुस्कुराया, "जी, आप ठीक कहती हैं। अगले महीने से आप किसी और को रख लीजिए।"

लौटते समय उसने साइकिल धीरे चलाई। कंकड़बाग की सड़कों पर शाम की भीड़ थी, ठेले वाले चिल्ला रहे थे, कोई बारात निकल रही थी। *अमन को लगा, इस पूरे शहर में किसी को उसकी पढ़ाई, उसके घंटों, उसके आँसुओं से कोई मतलब नहीं। लोगों को बस परिणाम दिखता है। प्रयास अदृश्य होता है, असफलता सबको दिखती है।*

टपरी पर पहुँचकर उसने पंकज को सब बताया। पंकज ने ग़ुस्से में कहा, "भाई, तू उनकी बात दिल पर क्यों ले रहा है? उन्हें क्या पता कि एक नंबर, डेढ़ नंबर, तीन नंबर का फ़ासला क्या होता है।"

बिरजू भैया ने केतली नीचे रखते हुए कहा, "बाबू, लोग ताने इसलिए देते हैं क्योंकि उनके पास कहानी का बस आख़िरी पन्ना होता है। पूरी किताब तो तुम्हारे पास है। जिस दिन आख़िरी पन्ना बदलेगा, यही लोग कहेंगे कि हम तो पहले से जानते थे।"

अगले हफ़्ते अमन को एक नया ट्यूशन मिला, मुसल्लहपुर में ही, एक रिक्शा चालक की बेटी, जो बारहवीं में थी और पुलिस में जाना चाहती थी। उसके पिता के पास फ़ीस के पूरे पैसे नहीं थे। "सर, अभी आधा दे पाएँगे, बाक़ी फ़सल कटने पर, गाँव से…"

"फ़ीस की चिंता मत कीजिए," अमन ने कहा। "बस बेटी रोज़ आए।"

वह लड़की हर दिन समय से आती, सवाल पूछती, और नोट्स इतनी सफ़ाई से बनाती कि अमन को अपने शुरुआती दिन याद आ जाते। एक दिन उसने पूछा, "सर, आप इतना अच्छा पढ़ाते हैं, आप ख़ुद अफ़सर क्यों नहीं बने?"

अमन हँसा, "अभी बन रहा हूँ। बस थोड़ा समय लग रहा है।"

*"तो हम दोनों साथ में बनेंगे सर," उसने मासूमियत से कहा। "आप SDM, मैं दारोगा।"*

उस रात डायरी में अमन ने लिखा, "कुछ लोग ताने देकर तोड़ते हैं, कुछ लोग भरोसा देकर जोड़ते हैं। आज एक बच्ची ने मुझे फिर से जोड़ दिया। शायद यही ज़िंदगी का संतुलन है।"

### अध्याय 18

# गर्दनीबाग की ठंडी रातें

❖ ❖ ❖

*70वीं की प्रारंभिक परीक्षा दिसंबर 2024 में हुई। परीक्षा के बाद एक केंद्र पर हंगामे और फिर दोबारा परीक्षा की ख़बरें आईं। सामान्यीकरण की आशंका, पेपर पर सवाल, और लाखों लड़कों का ग़ुस्सा, सब एक साथ सड़क पर उतर आया।*

गर्दनीबाग का धरना स्थल लड़कों से भर गया। दिसंबर की कड़कड़ाती ठंड, अलाव के चारों ओर बैठे लड़के, हाथों में तख़्तियाँ। अमन भी वहाँ था। पंकज उसके बगल में खड़ा नारे लगा रहा था, "हमें न्याय चाहिए!"

एक लड़का, जो सीवान से आया था, अलाव में हाथ सेंकते हुए बोला, "भाई, हम लोग पढ़ने आए थे, लड़ने नहीं। पर जब पढ़ाई पर ही भरोसा न रहे, तो क्या करें?"

फिर 29 दिसंबर की वह रात आई, जब लड़के गांधी मैदान से आगे बढ़े। पुलिस आई। लाठियाँ चलीं। ठंडी रात में पानी की बौछारें पड़ीं। अमन भागते भागते गिरा, घुटना छिल गया। किसी ने उसका हाथ पकड़कर उठाया, "चलो भाई, ज़िंदा रहोगे तो अगली परीक्षा दोगे।"

कमरे पर लौटकर अमन ने घुटने पर हल्दी लगाई। माँ का फ़ोन आया, "टीवी पर दिखा रहे हैं, पटना में लड़कों को मार रहे हैं। तू तो नहीं गया था न?"

*"नहीं माँ, मैं तो कमरे में पढ़ रहा था।" दूसरा झूठ। हर झूठ के साथ उसे लगता कि वह माँ से थोड़ा और दूर हो रहा है, पर सच बोलकर माँ की नींद छीनने की हिम्मत उसमें नहीं थी।*

70वीं की प्रारंभिक अमन ने निकाल ली। मुख्य परीक्षा भी दी। पर इस बार निबंध के पेपर में घड़ी ने धोखा दिया। आख़िरी उत्तर अधूरा छूट गया। परिणाम आया तो फिर वही शून्य।

*उस दिन वह पहली बार पूरी तरह टूटा। कमरे का दरवाज़ा बंद किया, पंखा बंद किया, बत्ती बंद की, और अँधेरे में फ़र्श पर बैठ गया। मोबाइल बजता रहा। पंकज दरवाज़ा पीटता रहा।*

***"अमन! दरवाज़ा खोल यार! अमन!"***

घंटे भर बाद अमन ने दरवाज़ा खोला। पंकज ने उसे गले लगा लिया। दोनों देर तक कुछ नहीं बोले। फिर पंकज ने कहा, "भाई, परीक्षा हमारी ज़िंदगी का हिस्सा है, पूरी ज़िंदगी नहीं। तू ये बात भूल रहा है।"

अमन ने पहली बार किसी के सामने खुलकर रोया। पटना की उस छोटी सी गली में, तीसरी मंज़िल के उस कमरे में, दो हारे हुए लड़के एक दूसरे को जीतने की हिम्मत दे रहे थे।

## अध्याय 19

# पंकज की वह रात

❖ ❖ ❖

70वीं के परिणाम ने सिर्फ़ अमन को नहीं तोड़ा था। पंकज भी उस सूची में नहीं था। यह उसका पाँचवाँ प्रयास था। अमन रो पड़ा था, पर पंकज नहीं रोया। वह बस हँसता रहा, ज़रूरत से ज़्यादा।

*"कोई बात नहीं भाई, अगली बार," वह हर किसी से कहता। टपरी पर बैठता, चुटकुले सुनाता, पर उसकी आँखें कहीं और होतीं। अमन ने कई दिनों तक यह बदलाव महसूस किया, पर समझ नहीं पाया।*

*फिर एक रात पंकज के कमरे की बत्ती देर तक नहीं जली। फ़ोन भी नहीं उठा। अमन ने दरवाज़ा खटखटाया। कोई जवाब नहीं। उसका दिल ज़ोर से धड़कने लगा। उसने और ज़ोर से खटखटाया।*

**"पंकज! पंकज, दरवाज़ा खोल!"**

*कुछ देर बाद दरवाज़ा खुला। पंकज अँधेरे में बैठा था, बिखरे बाल, लाल आँखें। मेज़ पर उसकी माँ की फ़ोटो रखी थी, और बगल में एक काग़ज़, जिस पर उसने कुछ लिखकर काट दिया था।*

*अमन ने कुछ नहीं पूछा। बस बत्ती जलाई, पानी का गिलास दिया, और उसके पास फ़र्श पर बैठ गया। देर तक दोनों चुप रहे। फिर पंकज टूट गया।*

***"भाई, मैं थक गया हूँ। पाँच साल। माँ बीमार है, बाबूजी ने सबको बता रखा है कि बेटा अफ़सर बनेगा। गाँव में लोग पूछते हैं, बेटा क्या करता है? बाबूजी कहते हैं, पटना में है। मैं कब तक उनके झूठ का कारण बनूँ?"***

अमन ने उसका हाथ पकड़ा। "पंकज, उस रात जब मैंने दरवाज़ा बंद किया था, तूने मुझसे क्या कहा था? याद है? परीक्षा हमारी ज़िंदगी का हिस्सा है, पूरी ज़िंदगी नहीं। आज वही बात मैं तुझसे कह रहा हूँ।"

"कहना आसान है भाई।"

"हाँ, आसान नहीं है। पर अकेले सहना उससे भी कठिन है। तू अकेला नहीं है पंकज। मैं हूँ, गुरुजी हैं, तेरी माँ है, जिसे तू ज़िंदा चाहिए, अफ़सर नहीं।"

उस रात दोनों ने पंकज की माँ को फ़ोन किया। रात के ढाई बजे। माँ घबरा गईं, "क्या हुआ बेटा?" पंकज कुछ नहीं बोल पाया। अमन ने फ़ोन लिया, "चाची, कुछ नहीं हुआ। बस पंकज आपकी आवाज़ सुनना चाहता था।"

माँ ने पंकज से बात की। धीरे धीरे, देर तक। क्या कहा, अमन ने नहीं सुना। बस इतना देखा कि बात करते करते पंकज का चेहरा थोड़ा हल्का हो गया, जैसे किसी ने उसके सीने से कोई भारी पत्थर उठा लिया हो।

अगली सुबह अमन पंकज को लेकर एक काउंसलर के पास गया, जो पटना विश्वविद्यालय के पास छात्रों से बात करती थीं। पंकज पहले झिझका, "भाई, लोग कहेंगे पागल है।"

"लोग तो तब भी कहेंगे जब तू चुप रहेगा," अमन ने कहा। "मन का दर्द भी बुखार जैसा है पंकज। उसका इलाज कराना कमज़ोरी नहीं, समझदारी है।"

उस दिन के बाद अमन और पंकज ने एक नियम बनाया। हर रविवार शाम वे गंगा किनारे जाते और कम से कम एक घंटा परीक्षा के अलावा किसी भी चीज़ पर बात करते। क्रिकेट, फ़िल्में, गाँव, बचपन, कुछ भी। पंकज कहता, "भाई, ये हमारा अनिवार्य विषय है, इसमें फ़ेल होना मना है।"

उस रात अमन ने डायरी में लिखा, "इस शहर में हर साल हज़ारों लड़के परीक्षा में फ़ेल होते हैं। पर सबसे बड़ा हादसा तब होता है जब कोई लड़का यह सोचने लगता है कि वह ख़ुद फ़ेल हो गया है। परीक्षा का परिणाम कागज़ पर होता है, आदमी की क़ीमत कागज़ पर नहीं होती।"

### अध्याय 20

# मैला आँचल और मेरा गाँव

❖ ❖ ❖

गर्दनीबाग की उस रात के बाद अमन कई दिनों तक कुछ पढ़ नहीं पाया। किताबें खुलतीं और बंद हो जातीं। एक दिन लाइब्रेरी के कोने में, जहाँ पुराने अख़बार और कुछ उपन्यास पड़े रहते थे, उसकी नज़र एक धूल भरी किताब पर पड़ी, फणीश्वरनाथ रेणु का "मैला आँचल"।

बिहार विशेष की तैयारी में उसने रेणु का नाम सैकड़ों बार पढ़ा था। "आंचलिक उपन्यास के जनक", "पूर्णिया के मेरीगंज गाँव की कथा", एक लाइन का तथ्य, जो परीक्षा में दो अंक दिला सकता था। पर उसने कभी वह किताब नहीं पढ़ी थी। उस दोपहर उसने पहली बार परीक्षा के लिए नहीं, अपने लिए कुछ पढ़ा।

पन्ने पलटते पलटते उसे लगा कि मेरीगंज कोई दूर का गाँव नहीं, उसका अपना गाँव है। वही धूल, वही राजनीति, वही बीमारी, वही ग़रीबी, और उन सबके बीच वही ज़िद्दी उम्मीद। उपन्यास का डॉक्टर प्रशांत, जो बड़े शहर का चमकता भविष्य छोड़कर गाँव के लोगों के बीच रुक जाता है, अमन को देर तक सोचने पर मजबूर करता रहा।

उसने डायरी में लिखा, "रेणु ने गाँव की मिट्टी को उसकी पूरी गंदगी और पूरी ख़ूबसूरती के साथ लिखा। हम लोग गाँव से भागकर अफ़सर बनना चाहते हैं, ताकि गाँव लौटकर उसे बदल सकें। पर कहीं ऐसा तो नहीं कि भागते भागते हम उस गाँव को ही भूल जाएँ जिसके लिए भागे थे?"

पंकज ने उसे किताब में डूबा देखा तो हैरान हुआ। *"भाई, इतने बुरे दिन आ गए कि उपन्यास पढ़ रहा है? प्रीलिम्स में मैला आँचल से एक ही सवाल आता है, लेखक कौन है।"*

***"पंकज, कभी कभी जो सवाल परीक्षा में नहीं आता, वही ज़िंदगी में सबसे ज़रूरी होता है," अमन ने कहा।***

उसी हफ़्ते उसे प्रेमचंद की कहानी "नमक का दारोगा" फिर याद आई, जो उसने स्कूल में पढ़ी थी। उसमें एक पिता अपने बेटे को नौकरी की "असली" समझ देते हुए कहता है, "मासिक वेतन तो पूर्णमासी का चाँद है, जो एक दिन दिखाई देता है और घटते घटते लुप्त हो जाता है। ऊपरी आय बहता हुआ स्रोत है, जिससे सदैव प्यास बुझती है।"

अमन मुस्कुराया। सौ साल पहले लिखी यह बात आज भी कितने घरों में बोली जाती है। उसके अपने गाँव में भी लोग पूछते थे, *"अफ़सर बनोगे तो ऊपर की कमाई होगी न?"* पर कहानी का नायक वंशीधर वह चाँद वाला रास्ता नहीं छोड़ता, ईमानदारी का रास्ता चुनता है, और अंत में वही ईमानदारी उसकी पहचान बन जाती है।

उस रात अमन ने दीवार पर एक नया काग़ज़ चिपकाया। उस पर लिखा, "अगर कभी अफ़सर बना, तो वंशीधर बनूँगा। और अगर नहीं बना, तो भी वंशीधर ही रहूँगा।"

कई दिनों बाद उसने पहली बार चैन की नींद ली। सपने में उसने अपना गाँव देखा। बाढ़ के बाद की गीली मिट्टी, धान की हरी कतारें, और खेत की मेड़ पर खड़े पिताजी, जो हाथ हिलाकर उसे बुला रहे थे।

अगली सुबह उसने टिकट कराया। तीन साल बाद, घर जाने का।

## अध्याय 21

# खेत, कर्ज़ और माँ की आवाज़

❖ ❖ ❖

*दिवाली पर अमन तीन साल बाद गाँव गया। स्टेशन वही था, खंभा वही था, पर पिताजी अब उस खंभे से टिककर खड़े नहीं थे। वे बेंच पर बैठे थे। कमर झुक गई थी, बाल पूरे सफ़ेद हो गए थे।*

"बाबूजी, आप आए क्यों? मैं ख़ुद आ जाता।"

"तुम्हें लेने आने का मन था," पिताजी ने कहा, और उठने में उन्हें अमन का सहारा लेना पड़ा।

*घर पहुँचकर उसे पता चला कि पीछे वाला दो कट्ठा खेत बिक चुका है। माँ ने बताया, "तेरी कोचिंग, किराया, किताबें, फिर बाबूजी की बीमारी। क्या करते? पर तू चिंता मत कर, खेत फिर आ जाएगा, बस तू कुछ बन जा।"*

अमन आँगन में चुपचाप बैठा रहा। तुलसी के चौरे पर दिया जल रहा था। उसे लगा, यह दिया नहीं, उसके माँ बाप की उम्मीद है, जो हर साल थोड़ा थोड़ा तेल ख़त्म होने के बावजूद जलती रहती है।

शाम को चौपाल पर गाँव के मुखिया जी ने पूछ ही लिया, *"का हो अमन, कब तक पढ़ते रहोगे? रामदेव का बेटा तो दरोगा बन गया, और श्यामलाल का बेटा दिल्ली में कंपनी में है। उमर निकल रही है बउआ।"*

अमन मुस्कुराया, वैसे ही जैसे हर अभ्यर्थी मुस्कुराता है, जब उसके पास जवाब नहीं होता। "इस बार हो जाएगा चाचा।"

*रात को माँ उसके सिरहाने बैठीं, बालों में तेल लगाते हुए। "लोगों की बात मत सुनना। तू जितना पढ़ता है, उतना इस गाँव में किसी ने नहीं पढ़ा। नौकरी मिले न मिले, तू हमारा बेटा है, यही बहुत है।"*

*"माँ, अगर कभी नहीं हुआ तो?"*

*"तो क्या? खेती है, ट्यूशन है, ज़िंदगी है। भगवान ने पेट दिया है तो दाना भी देगा। पर तू हार मत मानना, और ख़ुद को कुछ मत करना। समझा?"*

वह आख़िरी वाक्य अमन के दिल में अटक गया। *माँ ने शायद अख़बारों में वे ख़बरें पढ़ी थीं, जिनमें किसी कमरे में कोई लड़का हमेशा के लिए चुप हो गया था। अमन ने माँ का हाथ पकड़ा, "माँ, तेरा बेटा कायर नहीं है।"*

लौटते समय पिताजी ने उसके हाथ में दो हज़ार रुपये रखे। अमन ने मना किया तो बोले, "रख ले। बाप का पैसा उधार नहीं होता।" ट्रेन चली तो अमन ने देखा, पिताजी स्टेशन पर देर तक हाथ हिलाते रहे, जब तक ट्रेन मोड़ पर ओझल नहीं हो गई।

## अध्याय 22

# छोटी बहन की आवाज़

❖ ❖ ❖

गाँव से लौटने के कुछ हफ़्ते बाद अमन के व्हाट्सऐप पर एक लंबा वॉइस मैसेज आया। छोटी बहन रानी का था। रानी अब समस्तीपुर के कॉलेज में BA के आख़िरी साल में थी।

"भैया, प्रणाम। माँ कहती हैं तुम्हें परेशान मत करना, पर आज मुझसे रहा नहीं गया। कल एक रिश्ते वाले आए थे। लड़के वाले पूछ रहे थे कि भाई क्या करता है। बाबूजी कुछ नहीं बोले, बस चुप हो गए। मुझे बहुत बुरा लगा भैया, उनके लिए नहीं, तुम्हारे लिए।"

*आवाज़ थोड़ी रुकी, फिर आगे बढ़ी।*

*"पर मैं तुमसे एक बात कहना चाहती हूँ। तुम हमारे हीरो हो। जब मैं छोटी थी, तुम लालटेन में पढ़ते थे और मैं तुम्हारे बगल में बैठकर तुम्हारी किताबों के चित्र देखती थी। आज मैं कॉलेज में हूँ, तो सिर्फ़ इसलिए क्योंकि तुमने बाबूजी से लड़कर मेरा दाख़िला कराया था। तुम्हारा चयन हो या न हो, तुम मेरे लिए हमेशा सबसे बड़े अफ़सर रहोगे।"*

*"और हाँ, मेरी शादी की चिंता मत करना। मुझे भी पढ़ना है। मैं भी BPSC दूँगी, तुम्हारी तरह। फिर हम दोनों साथ में तैयारी करेंगे। बस तुम हार मत मानना भैया।"*

मैसेज ख़त्म हुआ। अमन ने उसे दोबारा सुना, फिर तीसरी बार। फिर वह छत पर चला गया और देर तक आसमान को देखता रहा। आँखें भीगी थीं, पर इस बार दुख से नहीं।

उसने रानी को वापस वॉइस मैसेज भेजा। "रानी, तूने आज मुझे वो दे दिया जो पाँच साल में कोई परिणाम नहीं दे पाया। अब सुन, तू ज़रूर पढ़ेगी। और तेरी शादी तब होगी जब तू ख़ुद चाहेगी। बाबूजी से मैं बात करूँगा। और हाँ, तेरे लिए मैं अपने सारे नोट्स सँभालकर रखूँगा। उन पर पाँच साल की धूल है, पर पाँच साल का अनुभव भी।"

उस रात टपरी पर पंकज ने पूछा, "भाई, आज बड़ा मुस्कुरा रहा है। रिज़ल्ट आ गया क्या?"

*"नहीं पंकज," अमन ने कहा, "आज मुझे पता चला कि मेरे घर में कोई है जो मेरी असफलताओं को भी मेरी उपलब्धि मानता है। ऐसा भरोसा हो तो कोई भी परीक्षा बड़ी नहीं लगती।"*

उसने कैलेंडर पर उस दिन के ख़ाने में हरे टिक के बगल में एक छोटा सा दिल बनाया। उस महीने का वह इकलौता दिन था जिस पर उसने पढ़ाई का हिसाब नहीं, ज़िंदगी का हिसाब लिखा।

## अध्याय 23

# इकहत्तरवीं की प्रतीक्षा

❖ ❖ ❖

पटना लौटकर अमन ने कमरे की दीवार से सारे पुराने काग़ज़ उतार दिए। सिर्फ़ एक नया काग़ज़ चिपकाया, "71वीं BPSC। इस बार डर के बिना।"

*इस बार उसने तैयारी का तरीक़ा बदल दिया। सुबह पाँच बजे उठकर गंगा किनारे दौड़ने जाता। फिर लाइब्रेरी में दस घंटे। शाम को पंकज के साथ उत्तर लेखन की चर्चा। रात को दस बजे फ़ोन बंद, किताब बंद, आँखें बंद। उसने पहली बार समझा कि यह परीक्षा सिर्फ़ ज्ञान की नहीं, धैर्य की भी है, और धैर्य थके हुए दिमाग़ में नहीं टिकता।*

प्रारंभिक परीक्षा का परिणाम आया। रोल नंबर सूची में था। इस बार अमन ने न लड्डू बँटवाए, न किसी को बताया। बस माँ को फ़ोन किया, "माँ, पहला पड़ाव पार।"

*"छठी मैया की कृपा है," माँ ने कहा। "अब चुपचाप पढ़। नज़र न लगे।"*

मुख्य परीक्षा के दिन अमन ने हर पेपर ऐसे लिखा जैसे यह उसका आख़िरी पेपर हो। *निबंध में उसने बिहार के उन लड़कों के बारे में लिखा जो "गाँव से शहर आते हैं, और शहर में अपना गाँव ढूँढते रहते हैं।" लिखते लिखते उसकी आँखें भर आईं, पर कलम नहीं रुकी।*

अब मुख्य परीक्षा का परिणाम आना बाक़ी है। हर सुबह वह आयोग की वेबसाइट खोलता है। हर दोपहर टेलीग्राम पर अफ़वाहें आती हैं, "इस हफ़्ते रिज़ल्ट।" "अगले हफ़्ते पक्का।" "कॉपी जाँच पूरी।" हर शाम कुछ नहीं आता।

*इंतज़ार भी एक परीक्षा है, और उसका कोई पाठ्यक्रम नहीं होता।*

इसी बीच 72वीं की अधिसूचना आई। पूरे पटना में फिर से हलचल। लाइब्रेरी की सीटें भर गईं, कोचिंग के पर्चे फिर से उड़ने लगे। अमन ने ठान लिया कि वह 71वीं के परिणाम का इंतज़ार करते हुए 72वीं की तैयारी भी करेगा।

फिर ख़बर आई, "72वीं प्रारंभिक परीक्षा की तिथि स्थगित।" लड़कों ने कहा, "चलो, एक महीना और मिल गया।" कुछ हफ़्ते बाद फिर ख़बर आई, "परीक्षा फिर स्थगित।" इस बार कोई ख़ुश नहीं हुआ।

पंकज ने चाय की टपरी पर सिगरेट का धुआँ छोड़ते हुए कहा, "भाई, हमारी उम्र आगे बढ़ रही है और परीक्षा पीछे। ये कैसा दौड़ है जिसमें फ़िनिश लाइन ख़ुद भाग जाती है?"

अमन ने हँसकर कहा, "पंकज, फ़िनिश लाइन भागेगी तो हम भी थोड़ा तेज़ दौड़ लेंगे।" पर रात को अकेले में उसने कैलेंडर देखा। उम्र की गिनती की। माँ बाप के चेहरे याद किए। और उस रात उसने एक फ़ैसला लिया।

## अध्याय 24

# मुख्य परीक्षा के वो दिन

❖ ❖ ❖

71वीं की मुख्य परीक्षा के दिनों में अमन ने समय को एक नए तरीक़े से जिया। अब वह दिन नहीं, घंटे गिनता था। और घंटे नहीं, मिनट।

परीक्षा से एक रात पहले उसने कमरे की दीवार पर एक टाइम टेबल चिपकाया। "सुबह 4:30 उठना। 5:00 से 6:00 रिवीज़न। 7:00 नाश्ता, दही चीनी। 8:30 केंद्र के लिए निकलना। 9:30 तक केंद्र पर।" नीचे लाल अक्षरों में लिखा था, "हर प्रश्न को आख़िरी प्रश्न मानकर लिखना।"

*पहले दिन केंद्र के बाहर वही भीड़ थी, वही चेहरे। कुछ नए लड़के, जिनकी आँखों में चमक थी, और कुछ पुराने चेहरे, जिनकी आँखों में अनुभव और थकान, दोनों एक साथ।* एक लड़का, जो शायद पहली बार मेन्स दे रहा था, बार बार अपना

एडमिट कार्ड देख रहा था। अमन ने उसके कंधे पर हाथ रखा, "घबराओ मत। जो पढ़ा है, वही आएगा। और जो नहीं आएगा, उसे भी लिख देना जितना समझ आए। कोरा पन्ना कभी अंक नहीं देता।"

लड़के ने हैरान होकर पूछा, "भैया, आप कितनी बार दे चुके हैं?"

अमन मुस्कुराया, "इतनी बार कि अब परीक्षा मुझसे डरती है।" लड़का हँस पड़ा, और उसकी घबराहट थोड़ी कम हो गई।

*परीक्षा हॉल में घड़ी की टिक टिक किसी ढोल की तरह बज रही थी।* तीन घंटे, बीस प्रश्न, हर प्रश्न के लिए नौ मिनट। अमन ने हर उत्तर में बिहार की मिट्टी डाली। संघवाद पर लिखा तो सरकारिया आयोग के साथ समस्तीपुर की बाढ़ राहत की बात लिखी। शिक्षा पर लिखा तो उस रिक्शा चालक की बेटी की बात लिखी, जो दारोगा बनना चाहती है। अर्थव्यवस्था पर लिखा तो उस खेत की बात लिखी, जो उसकी पढ़ाई के लिए बिका था।

आख़िरी पाँच मिनट बचे थे और एक प्रश्न अधूरा था। 70वीं का अधूरा निबंध उसकी आँखों के सामने घूम गया। उसने गहरी साँस ली, उत्तर को तीन बिंदुओं में समेटा, और ठीक आख़िरी घंटी के साथ कलम रख दी। इस बार कोई प्रश्न अधूरा नहीं छूटा।

केंद्र से बाहर निकलकर उसने पंकज को फ़ोन किया। "भाई, सब लिखा। पूरा। एक भी पन्ना ख़ाली नहीं।"

"तो आज रात टपरी पर पार्टी!" पंकज चिल्लाया। "और कल से फिर पढ़ाई। अगला पेपर बाक़ी है।"

*उन सात दिनों में अमन ने ठीक से खाना नहीं खाया, ठीक से सोया नहीं, पर एक अजीब सा सुकून था। जैसे पाँच साल की सारी पढ़ाई, सारी ठोकरें, सारे आँसू, इन सात दिनों के पन्नों पर उतर आए हों।*

आख़िरी पेपर के बाद वह सीधे गंगा किनारे गया। उसी सीढ़ी पर बैठा जहाँ कभी श्रुति के साथ बैठता था। अकेले एक कुल्हड़ चाय पी। फिर आसमान की तरफ़ देखकर कहा, "अब जो भी हो, मैंने अपना सब कुछ दे दिया। बाक़ी तुम्हारे हाथ में।"

## अध्याय 25

# पटना जंक्शन पर एक मुलाक़ात

❖ ❖ ❖

मुख्य परीक्षा के कुछ हफ़्ते बाद अमन घर जाने के लिए पटना जंक्शन पर खड़ा था। प्लेटफ़ॉर्म नंबर दो पर भीड़ थी, चाय वाले आवाज़ लगा रहे थे, और लाउडस्पीकर पर किसी ट्रेन के देर से आने की घोषणा हो रही थी।

*तभी उसने उसे देखा। सामने वाली बेंच पर, नीली साड़ी में, एक छोटे बच्चे का हाथ पकड़े, श्रुति बैठी थी।*

पाँच सेकंड तक अमन वहीं जड़ खड़ा रहा। फिर श्रुति ने भी उसे देखा। उसकी आँखों में पहले हैरानी आई, फिर कुछ और, जिसे अमन कोई नाम नहीं दे पाया।

"अमन?"

"कैसी हो श्रुति?"

कुछ पल दोनों चुप रहे, जैसे पाँच साल की सारी बातें एक साथ होंठों पर आकर अटक गई हों। बच्चे ने श्रुति का पल्लू खींचा, "मम्मी, ये कौन हैं?"

*"ये... ये मेरे एक पुराने दोस्त हैं, बेटा। बहुत पढ़ने वाले।"*

अमन बच्चे के सामने झुका, "नमस्ते। क्या नाम है आपका?"

"आरव," बच्चे ने शरमाते हुए कहा।

श्रुति ने धीरे से पूछा, *"अब भी तैयारी कर रहे हो?"*

*"हाँ। 71वीं की मेन्स दी है, रिज़ल्ट का इंतज़ार है। और 72वीं आख़िरी होगी।"*

श्रुति की आँखें भर आईं। "अमन, मैं उस दिन तुमसे जो कहकर गई थी… मैं रोज़ सोचती थी कि ग़लत किया या सही।"

"तुमने सही किया श्रुति," अमन ने बिना किसी कड़वाहट के कहा। "अगर तुम रुकतीं, तो शायद मैं हर परिणाम को तुम्हारे ऊपर बोझ बना देता। तुम ख़ुश हो, ये देखकर अच्छा लगा।"

"तुम भी ख़ुश रहना," श्रुति ने कहा। "और सुनो, जिस दिन नाम आए न, गंगा किनारे दो कुल्हड़ चाय ज़रूर पीना। एक मेरे हिस्से की।"

*तभी उसकी ट्रेन आ गई। श्रुति उठी, बच्चे को गोद में लिया, और भीड़ में खो गई।* जाते जाते उसने एक बार मुड़कर देखा, हाथ हिलाया, और फिर ट्रेन के डिब्बे में चढ़ गई।

अमन बेंच पर बैठ गया। उसकी अपनी ट्रेन आने में अभी बीस मिनट थे। उसने डायरी निकाली, उस मोड़े हुए पुराने काग़ज़ को देखा, जिस पर कभी डरते डरते "श्रुति" लिखा था, और उसके नीचे आज की तारीख़ के साथ लिखा, *"अधूरी कहानियाँ भी पूरी हो सकती हैं, अगर उन्हें माफ़ी और शुभकामना के साथ बंद किया जाए।"*

ट्रेन में बैठकर उसने खिड़की से बाहर देखा। पटना पीछे छूट रहा था। पहली बार उसे लगा कि वह इस शहर से कुछ लेकर नहीं, बल्कि बहुत कुछ छोड़कर जा रहा है, पुराने डर, पुराने घाव, पुरानी शिकायतें। और साथ ले जा रहा है बस एक हल्का सा मन।

## अध्याय 26

# आख़िरी उम्मीद का फ़ैसला

❖ ❖ ❖

रात के दो बजे थे। गली में कुत्ते भौंक रहे थे, कहीं दूर ट्रेन की सीटी बज रही थी। अमन ने डायरी खोली और लिखा:

*"प्रिय अमन, तुमने पाँच साल इस शहर को दिए। 67वीं में मुख्य परीक्षा, 68वीं में डेढ़ नंबर, 69वीं में तीन अंक, 70वीं में अधूरा निबंध, और 71वीं में अब तक अधूरा इंतज़ार। तुमने प्यार खोया, दोस्त आगे निकलते देखे, त्योहार छोड़े, शादियाँ छोड़ीं, माँ से झूठ बोले। अब 72वीं तुम्हारी आख़िरी उम्मीद है। इसके बाद तुम ख़ुद को एक नई ज़िंदगी का मौक़ा दोगे, चाहे परिणाम कुछ भी हो।"*

*उसने पेन रखा। एक अजीब सी शांति महसूस हुई। जैसे पहली बार उसने परीक्षा को अपनी ज़िंदगी से छोटा माना हो।*

सुबह उसने माँ को फ़ोन किया। "माँ, 72वीं मेरी आख़िरी परीक्षा होगी। उसके बाद मैं घर आऊँगा। चाहे अफ़सर बनकर, चाहे सिर्फ़ तुम्हारा बेटा बनकर।"

उधर से माँ की सिसकी सुनाई दी। फिर पिताजी की आवाज़ आई, जो शायद पास ही खड़े थे। "बेटा, हमने तुम्हें अफ़सर बनाने के लिए नहीं, आदमी बनाने के लिए भेजा था। आदमी तुम बन गए हो। बाक़ी जो होगा, देखा जाएगा।"

अमन फ़ोन पकड़े देर तक बैठा रहा। पाँच साल में पहली बार उसे लगा कि उसके कंधों से एक पहाड़ उतर गया है। बोझ अब भी था, पर अब वह बोझ उसका अपना था, किसी डर का नहीं।

उस दोपहर रवि का फ़ोन आया। अब वह किसी अंचल में अधिकारी था। "भाई, मेरे अंचल में एक बूढ़ी अम्मा आई थी, ज़मीन के काग़ज़ के लिए। उन्हें देखकर तुम्हारी माँ याद आ गई। तू जब अफ़सर बनेगा न, तो ऐसी माँओं के लिए बनना। और सुन, मेरे पास तेरे लिए 71वीं के मॉक इंटरव्यू के कुछ सवाल हैं।"

अमन मुस्कुराया। जिस दोस्त के सेलेक्शन पर कभी उसका दिल दुखा था, वही आज उसकी सबसे बड़ी ताक़त बन रहा था। उसे समझ आया कि जलन एक मौसम है, गुज़र जाता है। दोस्ती एक मिट्टी है, बची रहती है।

शाम को वह फिर उसी टपरी पर गया। चाय वाले भैया ने कहा, "का हो सर, आज बड़ा मुस्कुरा रहे हैं?"

"भैया, आज पहली बार किसी ने सर कहा और बुरा नहीं लगा," अमन हँसा।

### अध्याय 27

# रवि का अंचल

❖ ❖ ❖

फ़ैसले के कुछ दिन बाद रवि ने अमन को अपने अंचल कार्यालय बुलाया। "आ जा भाई, एक दिन मेरे साथ बिता। देख कि जिस कुर्सी के लिए हम लड़ रहे थे, वह असल में कैसी है।"

अमन बस से गया। ढाई घंटे का सफ़र, धूल भरी सड़कें, और रास्ते में हर कुछ किलोमीटर पर किसी कोचिंग का बोर्ड, "यहाँ से निकलते हैं अफ़सर"। अंचल कार्यालय एक पुरानी पीली इमारत में था। बरामदे में सैकड़ों लोग खड़े थे, कोई ज़मीन के काग़ज़ के लिए, कोई जाति प्रमाण पत्र के लिए, कोई बस इसलिए कि पिछले छह महीने से उसकी फ़ाइल कहीं "चल" रही थी।

रवि की कुर्सी पर पहुँचते ही अमन को लगा कि यह वही रवि नहीं है जो टपरी पर बैठकर चुटकुले सुनाता था। चेहरे पर थकान थी, आँखों के नीचे काले घेरे।

"बैठ भाई। चाय पिएगा? यहाँ की चाय बिरजू भैया जैसी नहीं है, पर चल जाएगी।"

दिन भर अमन ने रवि को काम करते देखा। एक बुज़ुर्ग अम्मा आईं, जिनकी ज़मीन पर पड़ोसी ने कब्ज़ा कर लिया था। रवि ने ख़ुद उठकर उनका हाथ पकड़ा, कुर्सी दी, और कर्मचारी को डाँटा, "इनकी फ़ाइल आज ही मेरे पास आएगी।" एक दलाल आया, जो किसी नेता का नाम लेकर काम करवाना चाहता था। रवि ने उसे बाहर का रास्ता दिखा दिया।

शाम को दोनों छत पर बैठे। रवि ने कहा, *"अमन, लोग सोचते हैं कि अफ़सर बनना मंज़िल है। यह मंज़िल नहीं, एक और परीक्षा है, जो हर दिन होती है और जिसका कोई परिणाम घोषित नहीं होता। हर दिन कोई न कोई प्रेमचंद के वंशीधर के पिता की तरह कान में फुसफुसाता है, ऊपर की आमदनी देखो। हर दिन तय करना पड़ता है कि तुम कौन हो।"*

"तो तू ख़ुश है?"

रवि कुछ देर चुप रहा। "ख़ुश हूँ, जब कोई अम्मा दुआ देकर जाती है। दुखी हूँ, जब सिस्टम के आगे हार जाता हूँ। पर भाई, एक बात कहूँ? तैयारी के वो साल मेरी ज़िंदगी के सबसे सच्चे साल थे। वहाँ हम सब बराबर थे। यहाँ कुर्सी आदमी को अकेला कर देती है।"

लौटते हुए बस में अमन खिड़की से बाहर देखता रहा। धान के खेत, बच्चों की भीड़, एक टूटा स्कूल, और उसके बाहर खड़े एक मास्टर साहब, जो शायद कभी ख़ुद भी किसी परीक्षा की तैयारी करते थे।

उसने डायरी में लिखा, "आज समझ आया कि कुर्सी पाने की लड़ाई से बड़ी लड़ाई कुर्सी पर बैठकर इंसान बने रहने की है। अगर मुझे कभी वह कुर्सी मिली, तो मैं उसे रवि की तरह सँभालूँगा। और अगर नहीं मिली, तो भी किसी अम्मा का हाथ पकड़ने के लिए कुर्सी की ज़रूरत नहीं होती।"

### अध्याय 28

# जो अभी लिखा जाना बाक़ी है

❖ ❖ ❖

आज भी अमन उसी कमरे में है। तीसरी मंज़िल, दस बाई बारह, एक खिड़की जो दीवार में खुलती है, और वही पंखा जो घूमता कम, आवाज़ ज़्यादा करता है। पर अब खिड़की पर एक तुलसी का गमला है, जो माँ ने दिवाली पर भेजा था।

दीवार पर अब एक ही काग़ज़ है। उस पर लिखा है, "72"। और उसके नीचे माँ की लिखावट में, जो उसने पिछली बार घर से लौटते हुए उसकी डायरी में लिखवा ली थी, *"हम इंतज़ार कर रहे हैं, पर तुझसे ज़्यादा ज़रूरी कुछ नहीं।"*

हर सुबह वह गंगा किनारे दौड़ता है। हर दोपहर लाइब्रेरी में पढ़ता है। हर शाम आयोग की वेबसाइट खोलता है, 71वीं के मुख्य परीक्षा परिणाम के लिए। और हर रात सोने से पहले ख़ुद से एक ही बात कहता है, "मैं हारा नहीं हूँ। मैं बस अभी जीता नहीं हूँ।"

कभी कभी उसे श्रुति की याद आती है। तब वह डायरी में मोड़कर रखे उस पुराने काग़ज़ को छूता है और धीरे से कहता है, "जहाँ भी हो, ख़ुश रहना।" अब उस याद में कड़वाहट नहीं, बस एक हल्की सी नमी है।

पंकज इस बार भी साथ है। कल रात उसने पूछा, "अमन, अगर 71वीं का रिज़ल्ट आ गया और नाम आ गया, तो सबसे पहले क्या करेगा?"

अमन ने खिड़की से बाहर देखा। गली में एक नया लड़का अपना बक्सा लेकर सीढ़ियाँ चढ़ रहा था, आँखों में वही चमक जो पाँच साल पहले अमन की आँखों में थी।

"सबसे पहले माँ को फ़ोन करूँगा," अमन ने कहा। "फिर उस नए लड़के को चाय पिलाऊँगा और बताऊँगा कि किसी पर्चे पर भरोसा मत करना। अपने आप पर करना।"

"और अगर नाम नहीं आया तो?"

अमन कुछ देर चुप रहा। फिर बोला, "तो 72वीं में आएगा। और अगर तब भी नहीं आया, तो भी अमन रहेगा। परीक्षा मेरा एक अध्याय है पंकज, मेरी पूरी किताब नहीं।"

पाँच सालों में कितनी ही बार उसकी स्क्रीन पर लिखा आया था, "0 of 0 Result Found"। पहले यह वाक्य उसे डराता था। अब वह जानता है कि यह सिर्फ़ एक PDF का उत्तर है, उसकी ज़िंदगी का नहीं। उसकी ज़िंदगी में तो बहुत कुछ मिला है, माँ का भरोसा, पंकज की दोस्ती, गुरुजी की सीख, और वह ज़िद जो किसी मेरिट लिस्ट में नहीं छपती।

तभी उसका मोबाइल काँपा। टेलीग्राम पर एक नोटिफ़िकेशन था, *"BPSC 71वीं मुख्य परीक्षा परिणाम जल्द।"* अमन ने फ़ोन उल्टा करके मेज़ पर रख दिया, किताब खोली, और पढ़ने लगा।

बाहर पटना की रात अपनी रफ़्तार से चल रही थी। किसी कमरे में कोई लड़का रो रहा था, किसी कमरे में कोई हँस रहा था, और किसी कमरे में अमन जैसा कोई लड़का बिना शोर किए अपनी तक़दीर लिख रहा था।

यह कहानी यहाँ ख़त्म नहीं होती। क्योंकि हर अभ्यर्थी की कहानी परिणाम से नहीं, उस सुबह से लिखी जाती है जब वह हारकर भी अलार्म बंद करके उठ जाता है।

# पाठकों के लिए

❖ ❖ ❖

**प्रिय अभ्यर्थी,**

अगर आप आज किसी परिणाम का इंतज़ार कर रहे हो, अगर आप किसी छोटे कमरे में बैठकर यह कहानी पढ़ रहे हो, तो याद रखना कि आपकी क़ीमत किसी मेरिट लिस्ट से तय नहीं होती। जो लड़का पाँच साल तक हर सुबह उठकर लड़ सकता है, वह ज़िंदगी में कहीं भी हार नहीं सकता।

माँ को सच बताना। दोस्तों से जलना नहीं, सीखना। ठगने वालों से सावधान रहना। और सबसे ज़रूरी, ख़ुद को कभी अकेला मत समझना। इस शहर के हर कमरे में आपके जैसा कोई जाग रहा है।

**शुभकामनाओं सहित,**

**Deepak Kumar Singh**

**Chief Mentor, IAS PCS Factory**

**[DU Topper, NET-JRF, Assistant Commandant, IB ACIO, Accounts Officer, Revenue Officer]**